ISBN: 978-93-5680-211-7

चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल
शशि शेखर
सुनील कुमार कुशवाहा

चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

शशि शेखर

सुनील कुमार कुशवाहा

E–book संस्करण: 2022

मूल्य: ₹149

ISBN: 978-93-5680-211-7

प्रकाशक:

सुनील कुमार कुशवाहा

अम्बेडकर नगर (कुशवाहा कॉलोनी), बिसंडा रोड, अतर्रा (बाँदा)

पिन कोड– 210201

Mob.– +91 9918888071

ई–मेल: suneelkushwaha.msc@gmail.com

चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन

राजीव अग्रवाल

डीन—शिक्षा संकाय

बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी

(उत्तर प्रदेश)

शशि शेखर

एम० ए० (पर्यावरण विज्ञान), एम० एड०

सुनील कुमार कुशवाहा

एम० एस–सी (गणित), बी० एड०

प्रक्कथन

शिक्षा का स्थान अपेक्षाकृत सर्वोपरि है। समय और स्थान के अनुसार शिक्षा की शैली में परिवर्तन आते गए हैं, प्राचीनकाल में गुरुकुल प्रणाली का स्वरुप परिवर्तित हुआ तथा आज के युग में शिक्षा का रूप मानव के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए निश्चित किया गया है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उसके शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का भी विकास किया जाये|

महात्मा गांधी जी के विचार से प्रभावित होकर तथा हमारे राष्ट्रपिता गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया जिससे देश का प्रत्येक नागरिक शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ मानसिक स्वच्छता के प्रति जागरूक हो सके क्योंकि जब तक मनुष्य के आस-पास का वातावरण स्वच्छ न होगा तब तक मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकता अर्थात प्रारम्भतः शारीरिक विकास तदुपरांत मानसिक विकास आवश्यक है।

मोदी जी द्वारा चलाये गए इस अभियान को तभी सफल बनाया जा सकता है जब इस देश के वयस्क नागरिकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी जागरूक किया जाये।

प्रस्तुत पुस्तक चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन से सम्बन्धित हैं। इस पुस्तक को पाँच अध्याय में विभाजित किया गया हैं।

प्रथम अध्याय में प्रस्तावना, समस्या का प्रादुर्भाव, समस्या कथन एवं इसमें निहित शब्दों की व्याख्या, चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालय, स्वच्छ भारत अभियान, विद्यार्थियों में जागरुकता अध्ययन की न्ययोचितता, अध्ययन के उद्देश्य, परिसीमांकन, परिकल्पनाएं महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया हैं।

द्वितीय अध्याय में संबन्धित साहित्य का अध्ययन, अध्ययन से सम्बंन्धित शोध ससाहित्, समीक्षात्मक निष्कर्ष का उल्लेख किया गया है।

तृतीय अध्याय में शोध अध्ययन की प्रक्रिया, विधि,सर्वेक्षण विधि, अध्ययन समष्टि, प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन, न्यादर्श की

विधियाँ, संभाव्य एवं असंभाव्य, प्रस्तुत अध्ययन की न्यादर्श विधि, न्यादर्श का विवरण अध्ययन के चर, प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण, प्रदत्तों का संकलन तथा अंकीकरण, संकलित प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु सांख्यिकी प्रविधियों का उल्लेख किया गया है।

चतुर्थ अध्याय में प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन, प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण एवं परिकल्पना परीक्षण का सविस्तार वर्णन किया गया है।

पंचम अध्याय में शोध उपादेयता के निष्कर्ष, शोध अध्ययन के शैक्षिक निहितार्थ, प्रस्तुत शोध अध्ययन के सुझाव, शिक्षक–शिक्षार्थी एवं भावी अध्ययन के लिए शोध हेतु सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध प्रबन्ध पर आधारित है। शोध कार्य के प्रकाशन से वैज्ञानिक ज्ञान भण्डार में वृद्धि होती है एवं नवीन अनुसन्धानों को प्रेरणा मिलती है। किसी भी शोध कार्य का तब तक कोई अर्थ नहीं है, जब तक कि वह जन सामान्य के लिए सुलभ न हो। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही विद्यार्थियों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरुक करने में सहायक सिद्ध होगा।

इस पुस्तक के सृजन में सन्दर्भ ग्रन्थ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है। हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अत: यदि अनुभवी विद्वतगण अवगत कराने का कष्ट करेंगे तो, हम आभारी रहेंगे।

राजीव अग्रवाल

शशि शेखर

सुनील कुमार कुशवाहा

अनुक्रमणिका

तालिका सूची

आरेख सूची

तालिका सूची

अध्याय- प्रथम

अध्ययन परिचय

स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है|......अरस्तू

अध्याय-प्रथम

अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा मानव की समस्त शक्तियों का स्वाभाविक एवं सामंजस्यपूर्ण विकास होता है इससे वह समाज का उत्तरदायी द्योतक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उत्तरोत्तर प्रयोग करने की भावना से ओत-प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुनः स्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है|

आदिकाल से आज तक मानव सभ्यता के इतिहास पर दृष्टिपात किया जाए तो यह प्रतीत होता है कि उसकी पृष्ठभूमि में शिक्षा की अहम् भूमिका है राष्ट्र, समाज, संस्कृति एवं सभ्यता में शिक्षा का स्थान अपेक्षाकृत सर्वोपरि है। समय और स्थान के अनुसार शिक्षा की शैली में परिवर्तन आते गए हैं, प्राचीनकाल में गुरुकुल प्रणाली का स्वरुप परिवर्तित हुआ तथा आज के युग में शिक्षा का रूप मानव के व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास के लिए निश्चित किया गया है। मनुष्य का सर्वांगीण विकास तभी संभव है जब उसके शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य का भी विकास किया जाये महात्मा गाँधी शिक्षा को मानव व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास के अर्थों में प्रयोग करते थे| वह यह समझते थे कि सच्ची शिक्षा वह है जो व्यक्ति के चरित्र का विकास करे, वस्तुतः वह सीख जाए कि किस प्रकार निम्न उत्तेजनाओं में नियंत्रण रखा जा सकता है और समाज की सेवा की जा सकती है।

महात्मा गांधी जी के विचार से प्रभावित होकर तथा हमारे राष्ट्रपिता गांधी जी के सपने को साकार करने के लिए माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र भाई मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ किया जिससे देश का प्रत्येक नागरिक शारीरिक स्वच्छता के साथ-साथ मानसिक स्वच्छता के प्रति जागरूक हो सके क्योंकि जब तक मनुष्य के आस-पास का वातावरण स्वच्छ न होगा तब तक मनुष्य स्वस्थ नहीं रह सकता अर्थात प्रारम्भतः शारीरिक विकास तदुपरांत मानसिक विकास आवश्यक है।

देश के नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने हेतु प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर 2014 को 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की। इस योजना को आरम्भ करने की चर्चा प्रधानमन्त्री जी ने 15 अगस्त 2014 को लाल किले पर स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने पहले संबोधन के दौरान की थी। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी ने दिल्ली स्थित वाल्मीकि बस्ती में स्वयं झाड़ू लगाकर 'स्वच्छ भारत अभियान' को आरम्भ किया | वर्तमान समय में स्वच्छता इसलिए भी आवश्यक है कि स्वच्छता से ही स्वास्थ्य जुड़ा हुआ है अर्थात यदि व्यक्ति का तन

तथा मन समन्वित होंगे तभी वह स्वस्थ्य नागरिक बनकर देश के भावी विकास के लिए सहयोग प्रदान कर सकेगा अतः यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि स्वच्छता तथा स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं। मोदी जी द्वारा चलाये गए इस अभियान को तभी सफल बनाया जा सकता है जब इस देश के वयस्क नागरिकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी जागरूक किया जाये।

<u>डैडफील्ड के अनुसार</u>

"व्यक्ति की पूर्ण तथा संतुलित क्रियाशीलता को मानसिक स्वास्थ्य कहा जाता है।" 1

नरेन्द्र मोदी जी का 'स्वच्छ भारत अभियान' विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य के विकास में किस प्रकार अपनी भूमिका निभाता है कार्ल मेनिंगर के इस विचार से स्पष्ट किया जा सकता है–

<u>कार्ल मेनिंगर के अनुसार</u>

"मानसिक स्वास्थ्य अधिकतम ख़ुशी और प्रभावशीलता के साथ वातावरण एवं उसके प्रत्येक दूसरे व्यक्ति के साथ मानव समायोजन है, वह एक संतुलित मनोदशा सतर्क बुद्धि सामाजिक रूप से मान्य व्यवहार तथा ख़ुशमिजाज बनाये रखने की क्षमता है|" 2

राष्ट्रीय विकास के क्षेत्र में जिस प्रकार शिक्षा की आधारभूत भूमिका होती है उसी प्रकार मानसिक तथा शारीरिक विकास में स्वच्छता की आधारभूत भूमिका है जिसे 'स्वच्छ भारत अभियान' के सार्थक प्रयास द्वारा प्राप्त किया जा सकता है। विद्यालय में छात्रों की मानसिक, बौद्धिक चिंतन, तर्क कल्पना, भाषा ज्ञान इत्यादि की शिक्षा मिलती है प्रधानमन्त्री जी ने स्वच्छता को मुख्य स्थान देते हुए कहा कि " संकल्प ले बनायें स्वच्छ भारत मिशन को कारगर, सफाई करना छोटा नहीं बल्कि देश भक्ति जैसा बड़ा काम है " मोदी जी ने स्वयं पार्किंग एरिया मंदिर मार्ग, वालिमिकी बस्ती की साफ़-सफाई करके कार्यक्रम का शुभारम्भ किया| मोदी जी ने जगद्गुरु रामभद्राचार्य समेत नौ रत्नों को सफाई अभियान में शामिल किया| भारत के राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी जी ने कहा कि भारत के प्रत्येक नागरिक को कम से कम प्रतिवर्ष 100 घंटे स्वच्छता के लिए अर्थात हफ्ते में 2 घंटे सफाई के लिए अवश्य देने चाहिए।

माननीय प्रधानमन्त्री जी ने कहा कि गाँधी जी की 150वीं जयंती 2019 तक स्वच्छ भारत स्वस्थ्य भारत के मिशन को सफल बनाना है। प्रधानमन्त्री जी द्वारा किया गया सार्थक प्रयास सराहनीय है जिसके फलस्वरूप स्वच्छ भारत के सपने को साकार किया जा सकता है, स्वच्छता तथा स्वास्थ्य दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।

<u>अरस्तू के अनुसार</u>

"स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ्य मस्तिष्क का विकास होता है "

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा शामिल किये गए नौ स्वच्छता रत्न के नाम निम्नवत हैं मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, क्रिकेटर सुरेश रैना, मोहम्मद कैफ, सूफी गायक कैलाश खेर, हास्य कलाकार राजू श्रीवास्तव, सांसद मनोज तिवारी, काशी विश्वनाथ मंदिर के आचार्य प्रो. देवी प्रसाद द्विवेदी, साहित्यकार मनु शर्मा व जगद्गुरु रामभद्राचार्य दिव्यांग विश्वविद्यालय के कुलपति जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी जैसी हस्तियाँ शामिल हैं| ये हस्तियाँ आम लोगों को स्वच्छ भारत तथा स्वस्थ्य भारत अभियान के लिए प्रेरित करेंगी, इन नौ रत्नों में से प्रत्येक रत्न नौ-नौ रत्नों का चयन करेगा| इस प्रकार स्वच्छता अभियान की एक श्रृंखला तैयार होगी| इन सभी रत्नों ने मोदी जी द्वारा नामित किये जाने पर ख़ुशी जताई थी |

स्वच्छ भारत अभियान के लिए धनराशि जुटाने के वास्ते सरकार ने 'स्वच्छ भारत कोष' शुरू किया है, इस कोष में जमा होने वाली धनराशि से स्कूलों, गाँवों और शहरों में शौचालय बनाने पर विशेष जोर दिया जायेगा। कोई भी व्यक्ति या कंपनी इस कोष में धनराशि दान कर सकता है | वित्त मंत्रालय ने इस कोष के बावत दिशा निर्देश जारी किये थे | इस कोष में कंपनियाँ कार्पोरेट सोशल उत्तरदायित्व के तहत धनराशि का इस्तेमाल गाँवों और शहरों में स्वच्छता के स्तर में सुधार के लिए किया जाएगा | कोष में यदि कोई व्यक्ति 1 करोड़ रूपए से अधिक की राशि दान देगा तो उसे प्रधानमन्त्री के हस्ताक्षर वाली रसीद प्राप्त होगी। कंपनियों को 20 करोड़ रुपये के दान पर यह रसीद मिलेगी | व्यक्तिगत दान अगर 50 लाख से 1 करोड़ रूपए के बीच है तो उसे भी वित्त मंत्री के हस्ताक्षर वाली रसीद मिलेगी। कोष के क्रियाकलापों की निगरानी तिमाही आधार पर वित्तमंत्री और प्रधानमन्त्री द्वारा की जायेगी |

स्वच्छता एक संस्कार है, यह न दिखावा है और न औपचारिकता | प्रधानमंत्री ने इस मृतप्राय संस्कार को संजीवनी दी है, यह भारत के लिए एक स्वर्णिम समय है। अगर अब भी नहीं जागरूक हुए तो सीखने का वक्त गुजर जाएगा। प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी ने हर दिन एक सीख दे रहे हैं जिस प्रकार एक आम आदमी के तौर पर मोदी जी हाथ में झाडू और फावड़ा लेकर श्रम करते हैं, उसे देखकर सीख लेने की जरूरत है।

प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी ने 2 अक्टूबर 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया था, इसके तहत वर्ष 2019 तक देश को स्वच्छ बनाने का लक्ष्य रखा गया है। इस पर लगभग 62,000 करोड़ रूपए खर्च आने का अनुमान है।

'स्वच्छ भारत अभियान पर श्री नरेन्द्र मोदी जी का सन्देश'–

प्रिय मित्रों,

मुझे विश्वास है कि आपने कई बार सुना होगा कि जहाँ स्वच्छता होती है वहीँ देवताओं का वास होता है, लेकिन जब व्यावहारिकता की बात आती है तो स्थिति अक्सर विपरीत मिलती है| हम 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत

अभियान आरम्भ कर रहे हैं। वर्ष 2019 में जब हम बापू जी की 150वीं जयंती मना रहे होंगे तो स्वच्छ भारत उनको सच्ची श्रद्धांजलि होगा| महात्मा गाँधी ने अपना पूरा जीवन स्वराज प्राप्ति के लिए समर्पित कर दिया, अब समय आ गया है कि हम अपनी मातृभूमि की स्वच्छता के लिए स्वयं को समर्पित कर दें। मैं आप में से प्रत्येक से आग्रह करता हूँ कि स्वच्छता के लिए प्रत्येक सप्ताह में 2 घंटे यानि प्रतिवर्ष लगभग 100 घंटे का योगदान दें, मैं आज प्रत्येक उस व्यक्ति से विशेषकर राजनीतिक और धार्मिक नेताओं, महापौर, सरपंचों, उद्योग जगत के अग्रजों से अपील करता हूँ कि वे शहरों और आस-पास के क्षेत्रों, गाँवों, कार्यस्थलों और यहाँ तक कि अपने घरों की स्वच्छता की कार्य योजना बनाकर मनोयोग से उसे क्रियान्वित करने में जुट जाएँ|

मैं स्वच्छ भारत के निर्माण के निर्माण के इस सामूहिक प्रयास में आप सबकी भागीदारी और सक्रिय योगदान का अनुरोध करता हूँ। स्वच्छता की आवश्यकता को आचार्य विनोबा भावे ने निम्न शब्दों में व्यक्त किया है

"बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ भीतरी स्वच्छता भी आवश्यक है।"

पतंजलि के ग्रन्थ योग सूत्र में हमें हर प्रकार की स्वच्छता के सूत्र मिलते हैं, संयुक्त राष्ट्र के उपमहासचिव ने कहा की मोदी के मुद्दे को अहमियत देना वाजिब है। महासचिव जैम एलियासन ने कहा कि मोदी का यह प्रयास लोगों तथा देश की भलाई के लिए है।

प्रधानमंत्री ने देश की सभी पिछली सरकारों और सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक संगठनों द्वारा सफाई को लेकर किये गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने जोर देते हुए कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है, यह काम तो देश के 125 करोड़ लोगों द्वारा किया जाना है जो भारत माता के पुत्र-पुत्रियाँ हैं| उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आन्दोलन में तब्दील करना चाहिए। लोगों को ठान लेना चाहिए कि वह न तो गंदगी करेंगे और न ही किसी को करने देंगे 73वें संविधान संशोधन अधिनियम 1992 के अनुसार स्वच्छता को 11वीं अनुसूची में शामिल किया गया है, इसके अनुसार स्वच्छ भारत से ही साकार होगा |

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

समस्या की उत्पत्ति का मूल कारण आधी आबादी का दर्द है| प्रधानमंत्री मोदी जी ने महिलाओं के खुले में शौच के लिए जाने को राष्ट्रीय शर्म करार दिया और वर्ष 2019 तक हर घर में शौचालय निर्माण का लक्ष्य स्थिर किया |

संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट के अनुसार देश की 50 प्रतिशत जनसंख्या शौचालय सुविधा से वंचित है ग्रामीण क्षेत्रों में स्थिति अधिक ख़राब है, इन क्षेत्रों में 60 प्रतिशत जनसंख्या शौचालय सुविधा से वंचित है| अतः भारत देश

की पहचान स्वच्छ भारत के रूप में कराने के लिए तथा राष्ट्रपिता गाँधी जी द्वारा देखे गए स्वच्छ भारत के सपने को साकार करने के लिए समस्या की उत्पत्ति होती है| भारत में लगभग 65 करोड़ लोगों के पास शौचालय सुविधाओं की कमी है, स्वच्छता की इस विशालकाय समस्या से निजात पाने के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी संस्थानों के प्रयास द्वि-आयामी रूप में सामने आते हैं। सरकारी कार्यक्रमों का ध्यान खासकर सामुदायिक अभियान पर रहा है| जनदबाव तथा पुरस्कृत समुदायों के माध्यम से खुले में शौच को 2019 तक समाप्त करना इसका मुख्य लक्ष्य है।

एच.आई.वी. की जानकारी का स्तर स्वच्छता तथा व्यक्तिगत रूप से स्वस्थ्य रहने की कला के प्रति जरूरी स्वास्थ्य अवधारणाओं को लेकर जागरूकता का संकेत है। स्वास्थ्य तथा स्वच्छता के प्रति इसी जागरूकता का अध्ययन करने के लिए मेरे मन में इस समस्या की उत्पत्ति हुई।

वर्तमान समय में अस्वच्छता के कारण अनेक रोगों का विकास हुआ है, जैसे-हैजा, मलेरिया व टायफाइड आदि| इन रोगों को विघटित करने में स्वच्छता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है, जब मैंने चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों का सर्वेक्षण किया तो ज्ञात हुआ वहां के छात्र-छात्राएं स्वच्छता के प्रति बिलकुल जागरूक नहीं हैं, उनकी स्वास्थ्य शिक्षा का ज्ञान पूर्ण नहीं है तभी मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई कि इस समस्या चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करना चाहिए जिससे विद्यार्थियों के शारीरिक विकास के साथ-साथ मानसिक विकास के उत्थान में अभूतपूर्ण भूमिका निभा सकता है क्योंकि किसी देश के विकास के लिए व्यक्ति का सर्वांगीण विकास आवश्यक है तभी तो गाँधी जी ने कहा था सर्वांगीण विकास का आशय व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक तथा बौद्धिक विकास से है। विद्यार्थियों को स्वास्थ्य शिक्षा का ज्ञान कराने तथा स्वच्छता के प्रति जागरूक करने की जिज्ञासा से मैंने 'स्वच्छ भारत अभियान' के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन की समस्या का चयन किया |

1.3 समस्या कथन–

शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य के लिए जिस समस्या का चुनाव किया गया है, उसका शीर्षक इस प्रकार है- "चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन | "

1.4 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या–

किसी अध्ययन समस्या या शोध कथन में समस्या को विस्तारपूर्वक समझाया जा सकता है | प्रयुक्त शब्दों का परिभाषीकरण से

1.4.1 चित्रकूट जनपद–

चित्रकूट जनपद मन्दाकिनी नदी के किनारे पर बसा भारत के सबसे प्राचीन तीर्थस्थलों में से एक है। यह उत्तर-प्रदेश के अति पिछड़े जिलों में गिना जाता है | चित्रकूट का वर्णन सृष्टि के आदिकाल में मिलता है। वर्तमान चित्रकूट जिले को 6 मई सन 1997 को तत्कालीन मुख्यमंत्री सुश्री मायावती द्वारा छत्रपति शाहू जी महाराज नगर नाम से सृजित किया। बाद में जन भावना को ध्यान में रखते हुए 4 सितम्बर सन 1998 को प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री कल्याण सिंह ने इस जनपद का नाम बदलकर पुनः चित्रकूट जनपद रख दिया। इसमें मऊ, मानिकपुर, कर्वी व राजापुर तहसीलें सम्मिलित हैं।

चित्रकूट जिला 24° 48' से 25° 12' उत्तरी अक्षांश तथा 80° 58' से 81° 34 पूर्वी देशांतर के मध्य स्थित है। यह जनपद पूर्व से पश्चिम 62 किलोमीटर तथा उत्तर से दक्षिण 57.5 किलोमीटर है। चित्रकूट जनपद के उत्तर में कौशाम्बी, दक्षिण में मध्यप्रदेश के सतना एवं रीवा जनपद, पूर्व में इलाहाबाद जिला तथा पश्चिम में बाँदा जनपद है। ये जिले चित्रकूट जनपद की राजनीतिक सीमा निर्धारित करते हैं। चित्रकूट का क्षेत्रफल 3452.9 वर्ग किलोमीटर है।
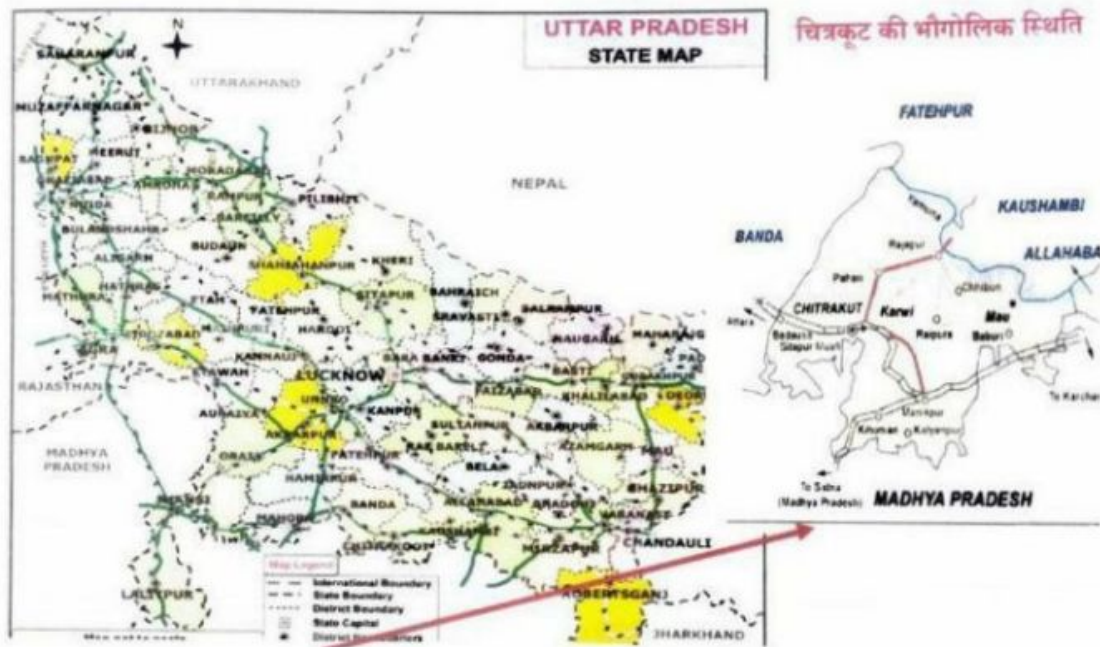
1.4.2 माध्यमिक विद्यालय–

कक्षा 9 से कक्षा 12 तक की कक्षाएं संचालित करने वाले विद्यालय को माध्यमिक विद्यालय कहते हैं हमारे देश में कक्षा 1-5 की शिक्षा के विद्यालय प्राथमिक विद्यालय, कक्षा 6-8 तक की शिक्षा के केंद्र पूर्व माध्यमिक विद्यालय तथा कक्षा 9-10 की कक्षाओं के विद्यालय माध्यमिक विद्यालय व 11 तथा 12 की कक्षा संचालन वाले विद्यालय उच्च माध्यमिक विद्यालय कहे जाते हैं।

<u>चित्र 1.4.2 संख्या भारत में शिक्षा व्यवस्था एक नजर में</u>
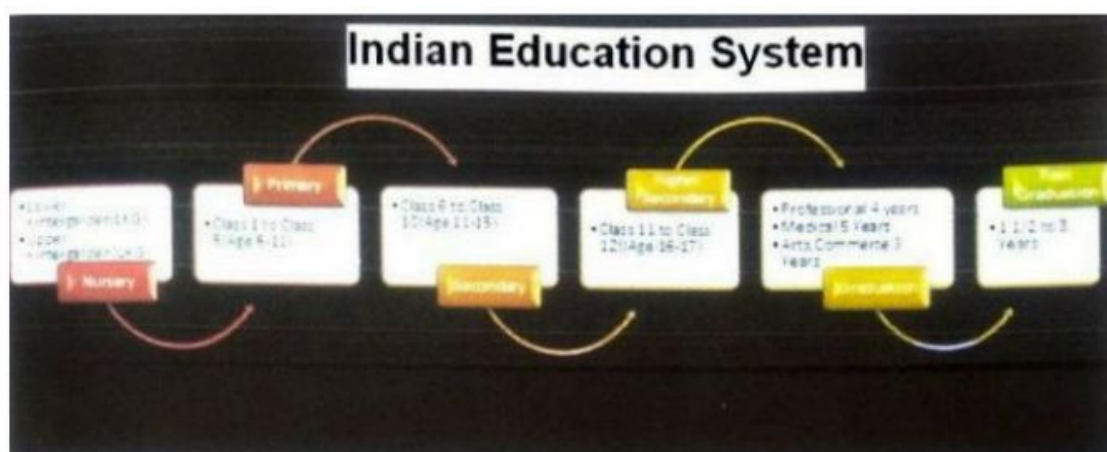
<u>1.4.3 स्वच्छ भारत अभियान–</u>

स्वच्छता के विकास के लिए भारत में क्रियान्वित किये गए अभियान को स्वच्छ भारत अभियान कहा गया है। स्वच्छ भारत अभियान को भली-भांति समझने से पूर्व हमें स्वच्छता को समझना होगा | स्वच्छता को पहले 'शुचिता' कहा जाता था | हमारी संस्कृति में इसका बहुत ही व्यापक अर्थ है। 'शुचि' शब्द संस्कृत में प्रकाशवाचक है। गीता शुचित्वं शब्द ब्राह्मण के लक्षण में आया है, तेरहवें अध्याय में ज्ञान के लक्षण में भी आया है। स्वच्छता का एक बाह्य रूप है तथा दूसरा आंतरिक रूप है, पतंजलि के सूत्र- शौचात स्वांग "जुगुप्सा परै अन्सगर्ग में शुचिता का अर्थ अपने शरीर के प्रति आसक्ति का अभाव है|

गांधी जयंती के अवसर पर शुरू हुए स्वच्छता अभियान के तहत कथित तौर पर प्रधानमन्त्री का सपना महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के सपने को पूरा करना है| इस स्वच्छता अभियान में जहाँ पूरी सरकार और उसके अधिकारियों से लेकर विभिन्न क्षेत्रों के तमाम सितारे शामिल हुए। वही ऐसे लोग भी इस अभियान का हिस्सा बने जिन्हें न तो सरकार की तरफ से ऐसा करने को कहा गया था और न ही वे किसी तरह से राजनीति से जुड़े हैं। आम

लोगों की झाड़ू लगाने वाली तस्वीरों से फेसबुक और अन्य सोशल मीडिया भर उठा। जगह-जगह से लोग प्रधानमन्त्री के नारे पर झाड़ू लेकर घर के बाहर निकल गए|

चित्र 1.4.3 - प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी जी स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत करते हुए

अधिकतर लोग मानते हैं कि प्रधानमन्त्री के स्वच्छता अभियान के कारण लोगों में साफ सफाई को लेकर जागरूकता आई है। एक धारणा प्रबल हुई है कि साफ-सफाई सिर्फ एक वर्ग की या सिर्फ सरकार की जिम्मेदारी नहीं है, देश का प्रधानमंत्री झाड़ू लगा रहा है तो कोई भी लगा सकता है | इस तरह मोदी ने अपने इस अभियान से साफ-सफाई को एक किस्म की अनिवार्यता दे दी है| जो वर्ग झाड़ू जैसी चीजों को पकड़ने की कल्पना भी नहीं करता था उसे भी झाड़ू के साथ सेल्फी खींचने में गर्व का अनुभव होने लगा है|

स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारत का सपना–

किसी भी राष्ट्र के विकास को मापने का उत्तम मानक वहां का स्वस्थ समाज होता है | नागरिकों के स्वास्थ्य का सीधा असर उनकी कार्य शक्ति पर पड़ता है। नागरिक कार्य शक्ति का सीधा सम्बन्ध राष्ट्रीय उत्पादन शक्ति से है| जिस देश की उत्पादन शक्ति मजबूत है वह वैश्विक स्तर विकास के नए-नए मानक प्राप्ति में सफल होता रहा है। इस सन्दर्भ में स्पष्ट हो जाता है कि किसी भी राष्ट्र के विकास में वहां के नागरिक स्वास्थ्य का होना बहुत जरूरी है, शायद

यही कारण है कि अमेरिका जैसे प्रभावशाली राष्ट्र की राजनीतिक सत्ता में स्वास्थ्य का मसला अपना अहम स्थान पाता है। दरअसल किसी भी राष्ट्र के लिए अपने नागरिकों की स्वास्थ्य की रक्षा करना पहला धर्म होता है।

जब से मानव की उत्पत्ति हुई है तभी से खुद को स्वस्थ रखने की जिम्मेदारी उस पर रही है, बदलते समय के साथ-साथ स्वास्थ्य की चुनौतियाँ भी बदलती रही हैं। वर्तमान में किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे बड़ी चुनौती है राष्ट्र के जनसंख्या के अनुपात में स्वास्थ्य सुविधाओं को है उपलब्ध कराना| इस समस्या से हम भारतीय भी अछूते नहीं हैं|

स्वास्थ्य एवं स्वच्छता में सम्बन्ध–

ठीक से देखें तो कई ऐसी बिमारियाँ हैं जिनका प्रत्यक्ष सम्बन्ध साफ-सफाई की आदतों से है मलेरिया, डेंगू, डायरिया और टीबी जैसी घातक बिमारियाँ इसका प्रत्यक्ष उदाहरण हैं| समाचारों के अनुसार अकेले देश की आर्थिक राजधानी मुंबई में पिछले 6 वर्षों में टीबी से 46.606 लोगों की जानें गयी हैं अर्थात देश की आर्थिक राजधानी में केवल टीबी से प्रत्येक दिन 18 लोग अपना दम तोड़ रहे हैं| बिहार के मुजफ्फरपुर, यू.पी. के गोरखपुर क्षेत्र व पश्चिम बंगाल के उत्तरी क्षेत्रों में जापानी बुखार से लगातार बच्चों की मौत हो रही हैं तथा यू.पी. में ही स्वाइनफ्लू के कारण हजारों बच्चों की मौत हो चुकी है। जुलाई 2014 के दूसरे सप्ताह में त्रिपुरा में मलेरिया से मरने वालों की संख्या 70 से ज्यादा हो गयी थी और 30 हजार से ज्यादा लोग मलेरिया की चपेट में थे| ये सभी बिमारियाँ ऐसी हैं जिनसे बचाव स्वच्छता में अन्तर्निहित है। इतना ही नहीं शरीर को स्वस्थ रखने के लिए हर स्तर पर स्वच्छता आवश्यक है और इस तथ्य को हमारे महापुरुषों ने भी लगातार स्वीकार किया है क्योंकि महात्मा गाँधी स्वास्थ्य का नियम बताते हुए कहते हैं, " "मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य एक ही सिक्के के दो पहलू हैं।" निरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है यह एक स्वयंसिद्ध सत्य है| अगर हमारा मन निर्विकार हो यानि निरोग हो तो वे हर तरह से हिंसा से मुक्त हो जाए, फिर हमारे हाथ से स्वास्थ्य के नियमों का सहज भाव से अनुपालन होने लगे और किसी तरह की ख़ास कोशिश के बिना ही हमारा शरीर तंदुरुस्त रहने लगे| स्वच्छता और स्वास्थ्य के सम्बन्धों को रेखांकित करते हुए महात्मा गाँधी ने निरोग रहने के लिए ग्राम स्वराज में कुछ नियम सुझाए हैं जो निम्नवत हैं–

i. हमेशा शुद्ध विचार कीजिये और तमाम गंदे व निकम्मे विचारों को मन से निकाल दीजिये|

ii. दिन-रात ताज़ी से ताज़ी हवा का सेवन करो।

iii. शरीर और मन के काम का तौल बनाये रखें यानि दोनों को बेमेल न होने दें।

iv. आप जो पानी पियें, जो खाना खाएं और जिस हवा में सांस लें वे सब बिलकुल साफ होने चाहिए| आप जितनी सफाई अपने लिए रखें उतनी ही सफाई का शौक अपने आस-पास के वातावरण में भी फैलाएं

गांधी जी स्वास्थ्य को न केवल भौतिक स्वच्छता से जोड़ते हैं बल्कि वह आंतरिक स्वच्छता के पहलू को भी यहाँ रेखांकित करते हैं। उनका यह विचार निम्न पंक्तियों में प्रतिबिम्बित होता है–

"मेरी राय में जिस जगह शरीर सफाई, घर सफाई और ग्राम सफाई हो तथा युक्ताहार और योग व्यायाम हो, वहां कम से कम बीमारी होती हैं और अगर चित्तशुद्धि भी हो तब तो कहा जा सकता है कि बीमारी असंभव हो जाती हैं" केंद्र सरकार द्वारा की गयी सजग पहल से रेलवे के अधिकारियों में इन दिनों सेवा और साफ़-सफाई करने की एक होड़ लगी हुई हैं। रेलवे अधिकारियों ने प्रधानमन्त्री के स्वच्छता अभियान से प्रेरित होकर रेलवे के प्लेटफार्मों को गोद लेना शुरू कर दिया मकसद यह था कि गोद लेकर प्लेटफार्म की साफ-सफाई अच्छी तरह की जा सके कहने वाले कहेंगे कि सफाई प्रेमी ये अधिकारी आज तक कहाँ थे क्या मोदी जी के कहने से पहले उन्हें नहीं पता था कि देश के रेलवे स्टेशन गंदे स्थानों में सबसे ऊपर हैं।

स्कूलों में जल, सफाई और स्वच्छता–

स्कूल विभिन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि से आये बच्चों के लिए मिलने का एक मंच है, और यह संदूषित जल, भोजन, हवा और मिट्टी के संपर्क के माध्यम से संक्रमण के संचरण के लिए प्रमुख केंद्र बन सकते हैं| विश्व में अनुसन्धान ने प्रमाणित किया है कि स्कूलों में सुरक्षित वाश प्रक्रियाओं की कमी, श्वसन सम्बन्धी संक्रमण और आँतों से सम्बन्धित रोगों के लिए जिम्मे रोगाणु के संचरण को बढ़ावा देती हैं। वाश गतिविधि, इन रोगाणु संक्रमणों के प्रसार को रोकने हेतु प्रभावी उपायों को सुनिश्चित करने में सहायक हो सकते हैं, जिससे बच्चों के स्वास्थ्य की सुरक्षा की जा सके|

स्कूलों में वाश एक एकीकृत हस्तक्षेप है, जिसमें स्कूलों में जल आपूर्ति और स्वच्छता के बुनियादी ढांचे तक पहुँच के साथ, संचालन और रखरखाव (ओ एंड एम), स्वच्छता शिक्षा, निगरानी, वित्तीय संसाधन और संस्थागत व्यवस्था सुनिश्चित करना भी शामिल है|

स्कूलों में स्वच्छता हेतु निम्न लिखित क्षेत्रों में हस्तक्षेप शामिल होना चाहिए–

1. कार्यशील और सुरक्षित जल आपूर्ति स्थान, जेंडर अनुकूल पृथक शौचालय, हाथ धोने के स्थान, ठोस और तरल कचरे के सुरक्षित निपटान के लिए प्रणाली |

2. स्कूली बच्चों के लिए प्रमुख स्वच्छता व्यवहार पर केन्द्रित, सहभागी शिक्षण तकनीकों का उपयोग करते हुए पूर्ण एकीकृत जीवन कौशल शिक्षा |

3. वाश सुविधाओं के रखरखाव की जिम्मेदारी सुनिश्चित करने के लिए परिवारों तथा समुदाय की भागीदारी।

स्वच्छ और स्वस्थ विद्यालय अवसरों का चक्र

'स्वच्छ भारत अभियान' को देश के 4041 शहरों में लागू किया गया है, इस मिशन के तहत शौचालयों का निर्माण, मैला ढोने तथा नगरीय अपशिष्टों के प्रति जागरूकता फैलाने का उद्देश्य

रहा है। इस योजना के तहत अगले 5 वर्षों में 62009 करोड़ रूपए की राशि खर्च करने का अनुमान है जिसमें 14623 करोड़ की राशि केन्द्र सरकार द्वारा खर्च की जानी है, इसके द्वारा वर्ष 2019 तक स्वच्छ भारत के संकल्प को पूरा किया जाना है, वर्ष 2019 में महात्मा गाँधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ मनाई जायेगी। भारत में 65 करोड़ लोगों के पास शौचालय नहीं है। स्वच्छता के इस विशालकाय समस्या से निजात पाने के लिए भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की है। स्वच्छ भारत अभियान के दो उपअभियान हैं-स्वच्छ भारत ग्रामीण अभियान तथा स्वच्छ भारत शहरी अभियान | जिसके क्रियान्वयन पर 1.96 लाख करोड़ रूपए खर्च होने का अनुमान है। इसमें से 1.34 लाख करोड़ रूपए गांवों में 11 करोड़ पक्का टॉयलेट बनवाने पर खर्च होंगे और शहरी इलाकों में 5.1 लाख पब्लिक टॉयलेट्स पर 62 हजार करोड़ रूपए खर्च होने का अनुमान है।

स्वच्छ भारत मिशन के लगभग तीन साल पूरे हो चुके हैं। इस मिशन की प्रगति सराहनीय है| कुछ राज्य बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। मिशन की शुरुआत में ग्रामीण स्वच्छता कवरेज 39 प्रतिशत से बढ़कर 68 प्रतिशत के मौजूदा आंकड़े पर पहुँच गया है| ग्रामीण भारत के 23 करोड़ से अधिक लोगों ने खुले में शौच की प्रथा को तिलांजलि दे दी है| 193 जिलों और पूरे देश के लगभग 2,35,000 गांवों को खुले में शौच से मुक्त घोषित किया गया है| पांच राज्य सिक्किम, हिमाचल प्रदेश, केरल, हरियाणा और उत्तराखंड ओडीएफ राज्य बन गए हैं। सबसे बड़ी उपलब्धियों में से एक यह है कि पवित्र गंगा के तट पर 4,000 से अधिक गाँव ओडीएफ बन गए हैं।

1.4.4 विद्यार्थी–

विद्यार्थी वह व्यक्ति होता है जो कोई चीज सीख रहा होता है, विद्यार्थी दो शब्दों से बना होता है-"विद्या" + "अर्थी" जिसका अर्थ होता है 'विद्या चाहने वाला | विद्यार्थी किसी भी आयुवर्ग का हो सकता है बालक, किशोर, युवा या वयस्क | लेकिन महत्वपूर्ण बात यह है कि वह कुछ सीख रहा होना चाहिए |

संस्कृत सुभाषित में विद्यार्थी के बारे में कहा गया है-

आचार्यात पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया ।

पादं सब्रह्मचारिभ्य: पादं कालक्रमेण च ||

अर्थात (विद्यार्थी अपना एक-चौथाई ज्ञान अपने गुरु से प्राप्त करता है, एक चौथाई अपनी बुद्धि से प्राप्त करता है, एक-चौथाई अपने सहपाठियों से और एक-चौथाई समय के साथ (कालक्रम से, अनुभव से) प्राप्त करता है।

चित्र 1.4.4 विद्यार्थी

प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी से तात्पर्य चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालय में पंजीकृत समस्त छात्र-छात्राओं से है।

1.4.5 जागरूकता

जागरूकता वह अवस्था है जिससे छात्र अपने कार्य तथा लक्ष्य प्राप्ति के प्रति अत्यधिक सजग हो जाते हैं तथा समर्पित होकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए अग्रसर हो जाते हैं।

जब व्यक्ति अपनी इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओं, आदर्शों आदि को जीवन की वास्तविकताओं के अनुरूप ढालकर अपने तथा वातावरण के मध्य एक संतोषजनक सामंजस्य स्थापित कर देता है तब उसे जागरूक व्यक्ति कहा जा सकता है। ऐसे व्यक्ति के देखने, सोचने तथा कार्य करने के बीच एकीकरण का परिणाम होता है। मनोवैज्ञानिकों के लिए एकीकरण की यह अवस्था अच्छे मानसिक स्वास्थ्य की परिचायक होती है।

जॉन डी.वी. के शब्दों में–

"जागरूकता व्यक्ति की उन सभी क्षमताओं का विकास करना जो अपने वातावरण को नियंत्रित करने तथा अपनी संभावनाओं को पूरा करने योग्य बनायेंगी।"

1.5 अध्ययन की न्यायोचितता

भारत एक विकासशील देश है स्वतंत्रता के पश्चात से भारत के प्रत्येक क्षेत्रों तथा राज्यों के विकास के लिए प्रशंसनीय कदम उठाये गए। भारत स्वच्छता के विकास में अन्य विकसित देशों की तुलना में पिछड़ा हुआ है भारत को स्वच्छता विकास के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने के लिए तथा राष्ट्रपिता जी द्वारा देखे गए Clean India के सपने को साकार करने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' के कुशल संचालन की आवश्यकता है। स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करके न सिर्फ बाहरी स्वच्छता का विकास होगा अपितु आंतरिक स्वच्छता का भी विकास होगा। आन्तरिक स्वच्छता के विकास से आशय यहाँ पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य का विकास तथा अस्वच्छता के कारण फैलने वाले अनेक रोगों (हैजा, मलेरिया तथा टायफाइड आदि) की रोकथाम करना है।

किसी भी राष्ट्र की प्रगति में शिक्षा का स्थान सर्वोपरि है अर्थात शिक्षा के द्वारा ही श्रेष्ठ नागरिकों का सृजन होता है जो राष्ट्र के विकास में अभूतपूर्व भूमिका निभाते हैं| हमारे राष्ट्रपिता गाँधी जी ने भारतवासियों से दो बातें कही- 'स्वच्छ भारत स्वस्थ्य भारत' प्राप्ति के सपने को साकार करने के लिए स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन न्यायोचित है| स्वच्छ भारत से सार्वजनिक स्वास्थ्य और सफाई बढ़ेंगे और गरीबों के पैसे भी बेचेंगे तथा समाज के कमजोर वर्गों को रोजगार के अवसर प्राप्त होंगे इससे भारत की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा | सिर्फ 2 घंटे प्रत्येक सप्ताह प्रति व्यक्ति को सफाई के लिए देना होगा | भारत सरकार ने 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की है। इस कार्यक्रम की सफलता तथा विशेष तौर पर इसका दीर्घायु होना संभवतः सामाजिक संरचनात्मक शक्तियों के साथ जुड़ने पर निर्भर करता है जो निम्न स्वच्छता स्थिति को संचालित करती है।

हम पाते हैं कि स्वच्छता की स्थिति की बेहतरी में जागरूकता एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है| इसके लिए मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति की आवश्यकता है, जो आधुनिक सुख सुविधाएँ तथा जनस्वास्थ्य शिक्षा को लोगों के दरवाजे तक ले जाएँ|

स्वामी विवेकानन्द के अनुसार–

"मनुष्य के लिए कुछ भी असंभव नहीं है, अगर तुम खुद को या किसी को कमजोर समझते हो, तो यह बड़ी भूल है।"

अतः इस समस्या के अध्ययन की आवश्यकता इस उद्देश्य से भी न्यायोचित है कि इससे शिक्षकों के साथ-साथ विद्यार्थियों को भी जागरूक किया जाए इस अभियान की सफलता सिर्फ केंद्र सरकार की जिम्मेदारी नहीं है अपितु प्रत्येक व्यक्ति को इसकी सफलता के लिए योगदान करना होगा जिससे इसे एक जनान्दोलन में परिवर्तित किया जा सके|

1.6 प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य–

किसी भी शोध समस्या का अध्ययन निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है, यदि इन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समस्या का विश्लेषण किया जाए तो अध्ययन सारगर्भित हो जाता है|

प्रस्तुत अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं–

1. चित्रकूट जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना |

2. माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान सम्बन्धी सामग्री का अवलोकन करना |

3. चित्रकूट जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता का लिंगानुसार तुलनात्मक अध्ययन करना |

4. माध्यमिक विद्यालयों में सफल स्वच्छ भारत अभियान की कठिनाइयों का अवलोकन करना |

5. माध्यमिक विद्यालयों में सफल स्वच्छ भारत अभियान हेतु सुझाव प्रस्तुत करना |

1.7 अध्ययन की परिकल्पना–

किसी व्यक्ति को जिस समय कोई समस्या होती है तो वह उसके समाधान के उपायों पर विचार करने लगता है। परिणामस्वरूप उपाय उसके मन मस्तिष्क में आते हैं, वे समस्या के संभावित समाधान होते हैं| यह अलग बात है कि वे बाद में असत्य सिद्ध हों या सत्य सिद्ध हों | इसी प्रकार जब शोधकर्ता किसी शोध समस्या का अंतिम रूप से चयन कर लेता है, तो वह उसका अस्थायी समाधान या संभावित समाधान एक परिक्षनीय प्रस्ताव रूप में करता है। इसी परीक्षनीय प्रस्ताव को शोध तकनीकी भाषा में परिकल्पना कहा जाता है। अर्थात किसी समस्या का एक प्रस्तावित परीक्षनीय उत्तर ही परिकल्पना कहलाता है। परिकल्पना अंग्रेजी भाषा के शब्द Hypothesis का हिंदी रूपांतरण है।

Hypo-अपुष्ट thesis–मान्यता

Hypothesis अपुष्ट मान्यता परिकल्पना कहलाती है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा परिकल्पना को अधोलिखित रूपों में परिभाषित किया गया है–

वॉन डालेन के अनुसार–

"परिकल्पना अनुसंधान पथ में प्रकाश स्तम्भ का कार्यय करती है|"

टाउनसेंड के अनुसार–

"परिकल्पना समस्या का प्रस्तावित उत्तर होती है।"

जॉन डब्ल्यू ,बेस्ट के अनुसार–

"परिकल्पना एक ऐसा पूर्वानुमान घटनाओं एवं परिस्थितियों की व्याख्या करने हेतु अस्थायी रूप से किया जाता है और जो अनुसंधान कार्य को आगे बढ़ाने में सहायता करती है |"

परिकल्पना की उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि परिकल्पना शोधकार्य में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। इसके द्वारा मार्गदर्शन, समस्या का निश्चयीकरण, प्रमुख तथ्यों का विश्लेषण व्याख्या, सुझाव एवं निष्कर्ष आदि में सहायता मिलती है। प्रस्तुत लघु शोध की परिकल्पना निम्न है–

1. छात्र-छात्राओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है |

1.8 अध्ययन का परिसीमांकन–

प्रस्तु लघु शोध में साधन शक्ति एवं सीमित समय होने के कारण उनके सभी पहलुओं का अध्ययन करना असंभव है। अतः प्रस्तुत अध्ययन की कुछ परिसीमाएं हैं–

1. प्रस्तुत अध्ययन केवल चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों तक सीमित है।

2. प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थियों की सफल स्वच्छ भारत अभियान क्रियान्वयन में सहभागिता को जानने का प्रयास किया गया है।

3. प्रस्तुत अध्ययन केवल हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों तक सीमित है। इसमें अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, तमिल तेलगु आदि माध्यम के विद्यार्थियों को सम्मिलित नहीं किया गया|

4.प्रस्तुत अध्ययन केवल नियमित विद्यार्थियों तक सीमित है। इसमें पत्राचार, व्यक्तिगत एवं मुक्त विद्यालयों के विद्यार्थियों को शामिल नहीं किया गया है।

5. प्रस्तुत अध्ययन केवल दिवा छात्रों तक सीमित है। इसमें आवासीय छात्रों को शामिल नहीं किया गया है।

1.9 अध्ययन का महत्त्व–

शिक्षा गतिशील एवं चैतन्यमयी वैचारिक प्रक्रिया है जो बालक के आचार-विचार, व्यवहार, दृष्टिकोण में ऐसा परिवर्तन ला देती है जिससे उसकी सुप्त प्रतिभाओं एवं सद्गुणों का विकास होता है| इसी में शिक्षा प्रक्रिया की सार्थकता निहित है।

किसी भी स्तर का शोधकार्य तब तक उपयोगी नहीं हो सकता जब तक कि शिक्षा और समाज के लिए वह उपयोगी और सार्थक न हो इस शोधकार्य का महत्व भी इसलिए बढ़ जाता है क्योंकि वर्तमान समय में समूचा भारत गंदगी के कारण बढ़ते रोगों की समस्या से चिंतित है | विशेषकर विद्यालयी स्तर पर हुए बदलाव एवं पश्चिम के सांस्कृतिक आक्रमण से स्वच्छता और उसके व्यावहारिक क्रियान्वयन पर लगातार चिंतन किये जा जा रहे हैं|

अतः प्रस्तुत शोध मानव संसाधन के विकास एवं प्रगति के लिए महत्वपूर्ण है। अध्ययन से प्राप्त निष्कर्ष स्वच्छता अभियान के प्रति जागरूकता एवं उसके सफल क्रियान्वयन के लिए मील के पत्थर साबित होंगे|

अध्याय - द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

अध्याय द्वितीय

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना–

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के बिना शोधकार्य अंधे के तीर के समान होगा| इसके अभाव में व्यक्ति सही दिशा में एक पग भी आगे नहीं बढ़ सकता है, जब तक की यह ज्ञात न हो जाए की इस क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है। किस-किस के द्वारा किया गया है तथा उसके निष्कर्ष क्या आये थे तब तक वह न तो समस्या का निर्धारण कर सकता है और न ही उसकी रूपरेखा तैयार कर आगे बढ़ सकता है।

किसी भी विषय के किसी विशेष शोध प्रारूप को बनाने के लिए शोधकर्ता को पूर्ण सिद्धांत एवं शोधों से भली भांति अवगत होना चाहिए | इस जानकारी को निश्चित करने के लिए व्यावहारिक ज्ञान में प्रत्येक शोध प्रारूप की प्रारम्भिक अवस्था में इसके सिद्धांत एवं सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा करनी होती है। संसार के समस्त प्राणियों में मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्र किये गए ज्ञान का लाभ उठा सकता है। मानव ज्ञान के तीन पक्ष होते हैं- ज्ञान को एकत्र करना, उसे दुसरे तक पहुँचाना तथा ज्ञान में वृद्धि करना| यह तथ्य शोधकार्य में विशेषरूप से महत्वपूर्ण होते हैं| शोध कार्य में सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण एवं अध्ययन शोधकर्ता को नवीनतम ज्ञान के शिक्रों तक ले जाता है, जहाँ उसे अपने क्षेत्र से सम्बन्धित निष्कर्षों एवं परिणामों का मूल्यांकन करने का अवसर प्राप्त होता है तथा यह ज्ञात होता है कि ज्ञान के क्षेत्र में कहाँ रिक्तियां हैं, कहाँ निष्कर्ष विरोध है और कहाँ अनुसन्धान की पुनः आवश्यकता है।

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण में दो शब्द हैं-साहित्य और समीक्षा | साहित्य शब्द परंपरागत अर्थ से विभिन्न अर्थ प्रदान करता है। यह भाषा के सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है जैसे हिंदी साहित्य, आंग्ल साहित्य, संस्कृत साहित्य | इसकी विषयवस्तु के अंतर्गत गद्य, काव्य, नाटक आदि आते हैं| अनुसंधान के क्षेत्र के साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की ओर संकेत करता है, जिसके अंतर्गत सैद्धांतिक व्यावहारिक और तथ्यात्मक शोध अध्ययन आते हैं।

• समीक्षा शब्द का अर्थ शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाना है कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। • साहित्य की समीक्षा का कार्य अत्यंत

सृजनात्मक एवं थकाने वाला होता है क्योंकि शोधकर्ता को अपने अध्ययन को युक्तिपूर्ण कथन प्रदान करने के लिए प्राप्त ज्ञान को अपने ढंग से एकत्र करना होता है, साहित्य की समीक्षा के अर्थ को समझाने के लिए हम निम्न कथनों पर विचार करेंगे| सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञानकोषों, पत्र-पत्रिकाओं एवं शोध अभिलेखों आदि से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या के चयन, परिकल्पनाओं के निर्माण एवं अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने व कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है|

गडबार तथा स्केट्स के अनुसार–

"एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र, अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिए भी उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओं एवं खोजों से परिचित होना आवश्यक है।"

डब्ल्यू. आर. वर्ग के अनुसार–

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उसकी नींव को बनाता है जिसके ऊपर भविष्य का कार्य किया जाता है| यदि हम साहित्य की समीक्षा द्वारा प्रदान किये गए ज्ञान की नींव बनाने में असमर्थ होते हैं तो हमारा कार्य संभवतः तुच्छ और प्रायः उस कार्य की नकल मात्र होता है जो कि पहले ही किसी के द्वारा किया जा चुका है।"

जॉन डब्ल्यू. बेस्ट के अनुसार–

"व्यावहारिक रूप से सारा मानव ज्ञान भंडार पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है, अन्य जीवों के अतिरिक्त जो प्रत्येक पीढ़ी में नए सिरे से प्रारम्भ करते हैं मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का •निरंतर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"

शोधकार्य के अनुशीलन हेतु कई प्रकार की सामग्रियां उपलब्ध हैं, जिसमें से कुछ प्रमुख हैं शोध पत्रिकाएं, Journals, National and International Education research Abstract, शोध प्रबन्ध या लघु शोध प्रबंध, Internet आदि|

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन की आवश्यकता–

वस्तुतः सम्बन्धित साहित्य के अनुशीलन के बिना अनुसंधानकर्ता का कार्य अँधेरे में तीर चलाने के समान होता है क्योंकि उसे यह जानकारी नहीं हो पाती कि सम्बन्धित क्षेत्र में कितना कार्य हो चुका है तथा पूर्व के अनुसंधानों

में क्या कमियां रह गयी थी? अतः सम्बंधित साहित्य के अनुशीलन से पूर्व अनुसंधान प्रतिवेदनों की अच्छाईयों एवं बुराइयों का ज्ञान प्राप्त हो जाता है| अनुसंधान कार्य में सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन निम्न कारणों से महत्वपूर्ण है–

i. यह अध्ययन की समस्या को साधन प्रदान करता है तथा शोध की समस्या को चयन करने तथा पहचानने में सहायता प्रदान करता है|

ii. यह अध्ययन के लिए आधार प्रदान करता है तथा इससे अध्ययन के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।

iii. यह वास्तविक योजना बनाने और अध्ययन करने में अत्यंत महत्वपूर्ण सहायता प्रदान करता है।

iv. यह शोध को गुणात्मक तथा विश्लेषणात्मक दिशा प्रदान करता है|

v. इसकी सहायता से शोधकर्ता अपनी परिकल्पनाओं का निर्माण करता है।

सम्बन्धित साहित्य अध्ययन के उद्देश्य–

शोध कार्य में साहित्य की समीक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं–

i. यह समस्या के समाधान के लिए उचित विधि, प्रक्रिया तथ्यों के साधन और सांख्यिकीय तकनीकी का सुझाव देता है|

ii. यह सिद्धांत, विचार, व्याख्याएं अथवा परिकल्पनाएं प्रदान करता है जो नई समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं।

ii. यह शोध कार्य किये गए क्षेत्र में शोधकर्ता की निपुणता और सामान्य ज्ञान को विकसित करने में सहायक होता है।

ब्रस डब्ल्यू. टाक्सन (1978)–

साहित्य समीक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बतलाये गए हैं–

a. महत्वपूर्ण चरों को खोजना | शोध कार्य का स्वरुप बनाने के लिए प्राप्त अध्ययनों का संकलन करना |
b. जो हो चुका है उससे जो करने की आवश्यकता है उसको पृथक करना |
c. समस्या का अर्थ इसकी उपयुक्तता समस्या से इसका सम्बन्ध और प्राप्त अध्ययन इसके अंतर को निर्धारित करना |

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व–

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन के महत्व को स्वीकारते हुए गुड, बार तथा स्केट्स ने कहा है कि-"जिस प्रकार एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक होता है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजों से परिचित होता रहे, उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु के लिए यह आवश्यक है कि वह अनुसन्धान क्षेत्र में हुई नयी खोजों एवं ज्ञान से परिचित होता रहे| "

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व निम्नांकित कारणों से स्पष्ट होता है।

1. यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है|
2. अनुसंधान की विधि में सुधार कर श्रम की बचत करता है।
3. समस्या क्षेत्र के शोध की वस्तुस्थिति को समझना |
4. विचारणीय शोध की सफलता और निष्कर्षों की उपयोगिता अथवा महत्व की संभावना का आंकलन करना |

5. विचारणीय शोध के लिए निर्देशों अथवा संदेशों की अवधारणाओं को निर्मित करना |

6. शोध की परिभाषाओं, कल्पनाओं, सीमाओं और परिकल्पनाओं के विश्लेषण के लिए आवश्यक जानकारी देना |

7. शोध विधियों तथा तथ्यों के विश्लेषण को आधार प्रदान करना|

2.2 अध्ययन से सम्बंधित शोध साहित्य–

शोधकर्ता को समस्या से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित जो शोधकार्य उपलब्ध हो पाए हैं उनका अध्ययन करके लघु शोध को तर्कपूर्ण व व्यवहारिक बनाने का प्रयास किया है। स्वच्छ भारत अभियान से सम्बन्धित कतिपय शोधकार्यों का विवरण इस प्रकार है–

1. आरोग्य फाउंडेशन ऑफ इंडिया रांची (2015) झारखण्ड प्रदेश के विभिन्न ब्लाकों में स्वच्छ भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन में आने वाली समस्याओं पर अध्ययन किया|

2. डॉ. बबिता जांगड़ा (2016) ने स्वच्छ भारत अभियान कार्यक्रम के प्रभाव पर अध्ययन किया और उन्होंने पाया कि कार्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों में कम प्रभावी रहा है।

3. डॉ. शुभांगी राठी (2016) ने बॉम्बे सर्वोदय मंडल एवं गाँधी रिसर्च फाउंडेशन की सहायता से स्वच्छता के सम्बन्ध में गांधी के विचार पर अध्ययन किया और पाया कि स्वच्छता पर गाँधी के विचारों की प्रासंगिकता में बढ़ोत्तरी हुई है।

4.अपर्णा नायक (University of Idaho 2015) ने स्वच्छ भारत अभियान पर अध्ययन किया |

2.3 समीक्षात्मक निष्कर्ष–

इस अध्याय में शोधार्थी द्वारा स्वच्छ भारत अभियान से सम्बन्धित भारत व विदेशों में किये गए शोध अध्ययनों को संकलित किया और पाया कि सैद्धांतिक आधार पर हम कुछ मान्यताएं या पूर्व विचारधाराएँ सुनिश्चित कर लेते हैं परन्तु कई बार अध्ययन के उपरान्त इसमें भिन्नता दिखाई देती है| अनेक अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक, आर्थिक तथा व्यक्तिगत कारणों से ग्रामीण तथा शहरी पुरुष व महिला विद्यार्थी की जागरूकता में भिन्नता पायी गयी है| उपरोक्त शोध अध्ययनों का अवलोकन करने के उपरान्त शोधार्थी ने यह पाया कि स्वच्छ भारत अभियान की जागरूकता व प्रभाव पर पर्याप्त शोध नहीं हुए हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन इस अभाव की पूर्ति का माध्यम है अतः शोधकर्ता ने स्वच्छ भारत अभियान के प्रति माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन करने का प्रयास किया है।

अध्याय - तृतीय

शोध अध्ययन की प्रक्रिया

देश की सफाई एक मात्र सफाई कर्मियों की जिम्मेदारी नहीं है| क्या इसमें आम नागरिकों की कोई भूमिका नहीं है? हमें इस मानसिकता को बदलना होगा....नरेन्द्र मोदी

अध्याय - तृतीय

शैक्षिक अनुसंधान की विधि एवं प्रक्रिया

• जिज्ञासा मानव की मूल प्रवृत्ति है जिज्ञासा शांत करने की उत्कंठा मानव को अनुसंधान हेतु प्रेरित करती है। अनुसंधान या शोध अज्ञानता की परतों को हटा कर गूढ़ रहस्य को प्रकट करता। है यह ज्ञान के विकास के साथ-साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में प्रगति के मार्ग को भी प्रशस्त करता है। क्योंकि शोध का अर्थ अभूतपूर्व तथ्यों के सन्दर्भ में स्वीकत निष्कर्षों के परिशोधन हेतु आलोचनात्मक ढंग से विस्तारपूर्वक परीक्षण करना है।

शोध समस्या के अंतिम रूप से चयन के पश्चात उसके गहन विश्लेषण, निर्वाचन एवं निष्कर्ष हेतु उपयुक्त तकनीकी का चयन आवश्यक होता है। उपयुक्त तकनीकी का प्रयोग ही शोध कार्य को उचित दिशा प्रदान करता है| उपयुक्त चरों के सर्वोपयुक्त उपयोग को संभव बनाता है उसका मापन करता है और समन्वीकरण हेतु सार्थक निष्कर्ष की प्रक्रिया को प्रारंभ करता है शोध प्रक्रिया सभी क्षेत्रों के अनुसंधानों में यद्यपि लगभग एक सी ही होती है, किन्तु शोध प्रविधि भिन्न-भिन्न होती हैं| शोध प्रविधि के अंतर्गत आवश्यक समंकों के संग्रहण हेतु उपर्युक्त उपकरण स्रोत उसके वर्गीकरण एवं सारणीयन तथा न्यादर्शन विधि, विश्लेषण विधि, निर्वाचन विधि आदि को अध्ययन के उद्देश्य के अनुरूप सुनिश्चित किया जाता है|

3.1 अनुसंधान का अर्थ–

अनुसंधान का शाब्दिक अर्थ किसी विषय के लक्ष्य के बारे में अनु अर्थात बार - बार संधान अर्थात किसी विषय के प्रति गहराई से विचार करना अनुसंधान की प्रकृति है| हिंदी में इसके लिए अन्य समानार्थी शब्द हैं-शोध, अन्वेषण तथा अनुशीलन इत्यादि |

अंग्रेजी में अनुसन्धान को Research कहते हैं, जो दो शब्दों से मिलकर बना है

Research = Re + Search

Research में Re शब्दांश आवृत्ति और गहनता का द्योतक है। जबकि 'सर्च' शब्दांश खोज का समानार्थी है| इस प्रकार 'रिसर्च' का अर्थ हुआ प्रदत्तों की आवृत्यात्मक की ओर गहन खोज

अंग्रेजी का यह शब्द शोध की प्रक्रिया को प्रस्तुत करता है कि शोधकर्ता किसी तथ्य को बार बार देखता है और उसके सम्बन्धों में प्रदत्तों को एकत्रित करता है तथा उनके आधार पर अपनी समस्या के निष्कर्ष पर पहुँचाता है|

रेडमैन तथा मोरी ने रोमांस ऑफ रिसर्च में परिभाषा देते हुए लिखा है कि–

"अनुसन्धान नवीन ज्ञान प्राप्त करने के लिए एक व्यवस्थित प्रयास है|"

3.1.1 शैक्षिक अनुसन्धान–

शिक्षा के क्षेत्र में आई हुई कठिनाइयों का वैज्ञानिक विधि द्वारा प्रयोग करते हुए समाधान करना ही शैक्षिक अनुसंधान कहलाता है| शोध प्रश्नों का निर्माण व उपकरणों का प्रशासन किस प्रकार किया जाए यह सब शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया का हिस्सा है। अध्ययन का सुव्यवस्थित एवं वैज्ञानिक ढंग से संचालित करने हेतु कार्य प्रणाली व अनुसन्धान सम्बन्धी उपकरणों को अपनाया गया तथा प्रदत्तों का विश्लेषण करने हेतु सांख्यिकीय पद्धति को उपयोग में लाना शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया है|

एम. एम. ट्रेवर्स के अनुसार–

"शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में एक व्यवहार सम्बन्धी विज्ञान के विकास की ओर अग्रसर होती है "

प्रस्तुत अध्ययन के अंतर्गत शोध समस्या में सम्बन्धित शोध प्रविधि एवं प्रक्रिया को स्पष्ट किया गया है।

3.2 अनुसंधान विधि–

ज्ञानार्जन के यद्यपि अनेक आध्यात्मिक एवं वास्तविक, भौतिक एवं अभौतिक तथा संस्थागत एवं व्यक्तिगत स्रोत हो सकते हैं किन्तु शोध द्वारा ज्ञान प्राप्ति का एक मात्र साधन तर्क का प्रयोग है। तर्क का प्रयोग निगमन और आगमन विधि के आधार पर किया जा सकता है। निगमन विधि पर तर्क का क्रम 'सामान्य से विशिष्ट' की ओर रहता है जबकि आगमन विधि में तर्क का क्रम 'विशिष्ट से सामान्य की ओर रहता है।

विधि तंत्र शोध का आवश्यक अंग होता है, इसके द्वारा समग्र अनुसन्धान की दिशा तथा योजना निर्धारित होती है, जिस पर शोध कार्य अवलंबित होता है। शोध स्वरुप सुनिश्चित होने के साथ-साथ अध्ययन के लिए आवश्यक उपकरणों अथवा मापो का चयन, प्रतिदर्श का निर्धारण तथा परिकल्पना परीक्षण हेतु उपयुक्त सांख्यिकीय विधियों का चयन भी समाविष्ट रहता है।

• प्रस्तुत अनुसन्धान में आगमन विधि का प्रयोग किया गया है निष्कर्षों की संपुष्टि एवं सामान्यीकरण हेतु सांख्यिकीय तकनीकों का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत अनुसंधान तुलनात्मक प्रकृति का सर्वेक्षण आधारित लघु अनुसन्धान है| इसके अंतर्गत माध्यमिक स्तर पर स्वच्छ भारत अभियान के प्रति छात्र/छात्राओं की जागरूकता का अध्ययन एक शैक्षिक जागरूकता प्रश्नावली द्वारा किया गया है|

सर्वेक्षण के द्वारा प्राप्त सूचनाओं के आधार पर समंक निर्मित किये गए हैं तथा अनुसन्धान के उद्देश्यों एवं परिकल्पनाओं के अनुरूप उन्हें वर्गीकृत एवं सारणीबद्ध करके उपयुक्त सांख्यिकीय तकनीकों यथा माध्य (Mean), प्रमाप विचलन (S.D.), क्रांतिक अनुपात (C.R.), टी-परीक्षण आदि के द्वारा मूक समंकों को भाषा प्रदान करके निष्कर्ष प्राप्त किये गए हैं|

3.2.1 सर्वेक्षण विधि–

प्रस्तुत शोधकार्य में आदर्शमूलक सर्वेक्षण पद्धति के अंतर्गत प्रतिदर्श सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किया गया है। सर्वेक्षण पद्धति का प्रयोग किसी क्षेत्र में निश्चित तथ्यों की जानकारी करने के लिए किया जाता है किन्तु परिस्थितिवश जब किसी आबादी की समस्त इकाइयों का सर्वेक्षण नहीं होता है और केवल एक उपयुक्त नमूने का सर्वेक्षण किया जाता है तो उस प्रतिदर्श को सर्वेक्षण विधि कहते हैं। अतः इसकी विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अनुसन्धान का कार्य संपन्न किया गया है।

इस पद्धति में मनोवैज्ञानिक चरों के घटित होने की आवृत्ति उनके वितरण एवं पारस्परिक सम्बन्धों का निर्धारण करने के लिए समष्टि का अध्ययन उस समष्टि के प्रतिनिधित्यात्मक प्रतिदर्श से प्राप्त किया जाता है।

सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य प्रतिदर्श में मनोवैज्ञानिक चरों का मापन कर उनकी अभिवृत्ति का निरूपण कर समष्टि के विभेदीय भागों में उसके वितरण का वर्णन कर जन-सांख्यिकीय चरों का मनोवैज्ञानिक चरों के साथ सहसम्बन्ध का निर्धारण करना है।

सर्वेक्षण अनुसन्धान के स्वरुप को स्पष्ट करते हुए करलिंगर (1973) ने लिखा है–

अनुसंधान जनसंख्या और द्वारा चुने गए प्रतिदर्शों के द्वारा व्यापक एवं कम आकार वाली जनसंख्याओं अथवा समष्टियों का अध्ययन है, जिससे उसमें व्याप्त सामाजिक तथा मनोवैज्ञानिक परिवृत्यों के सापेक्षिक घटनाओं, वितरणों तथा पारस्परिक अंतर सम्बन्धों का ज्ञान हो सके।"

मार्स महोदय ने कहा है कि "सर्वेक्षण विधि एक विशेष सामाजिक समस्या अथवा समष्टि से सम्बन्धित उद्देश्यों हेतु व्यवस्थित तथा वैज्ञानिक विश्लेषण की एक विधि है।" अतः तथ्यों के वर्तमान स्तर को ज्ञात करने हेतु इस विधि का चयन किया गया है|

3.3 समष्टि–

किसी भी शोध अध्ययन में जीव संख्या या जनसंख्या का अर्थ अध्ययन की इकाइयों के समूह के रूप में लिया जाता है| व्यवहारपरक शोध चाहे प्रयोगात्मक हो या अप्रयोगात्मक हो, उनमें एक जनसंख्या से चुने गए कुछ व्यक्तियों या वस्तुओं के आधार पर शोधकर्ता एक अनुमान या निष्कर्ष पर पहुँचता है| जनसंख्या या समष्टि से तात्पर्य ऐसे व्यक्तियों या वस्तुओं से होता है जिसे शोधकर्ता अपने शोध के सन्दर्भ में स्पष्ट रूप में परिभाषित करता है तथा उसकी पहचान करके रखता है| जनसंख्या की संख्या में सभी प्रकार (स्त्री, पुरूष, बच्चे) का लेखा-जोखा तैयार किया जाता है| शोध की जनसंख्या में एक विशिष्ट समूह के समस्त व्यक्तियों को सम्मिलित किया जाता है वह सजातीय होते हैं। उदाहरण के लिए बुन्देलखंड विश्वविद्यालय के बी.एड. के छात्रों की जनसंख्या, इसमें से एक प्रकार की इकाइयों का न्यादर्श के लिए चयन किया जाए, जिससे सभी प्रकार (छात्र, छात्राएं, विज्ञान स्नातक, कला स्नातक, परास्नातक, विभिन्न आयु वर्ग) छात्र सम्मिलित किये जा सकें समष्टि के सबसे छोटे भाग अथवा अंग को इकाई कहते हैं अतः समष्टि इन इकाइयों अथवा व्यक्तियों का सामूहिक रूप होती है|

प्रस्तुत शोध अध्ययन में जीवसंख्या के परमित रूप जीवसंख्या वैसी जीवसंख्या को कहा जाता है जिसके सदस्यों की गिनती की जा सकती है। लिया गया है परमित जीवसंख्या वैसी में मऊ व कर्वी ब्लाक के माध्यमिक विद्यालयों को लिया है। प्रस्तुत शोध में दो प्रकार की प्रस्तुत शोधकार्य में शोधकर्ता ने चित्रकूट जनपद के माध्यमिक बिद्यालयों की जनसँख्या के रूप समष्टि को सम्मिलित किया गया है

i. विद्यालय समष्टि
ii. विद्यार्थी समष्टि

विद्यालय समष्टि: प्रस्तुत अध्ययन में शोध समष्टि के अंतर्गत चित्रकट के समस्त विद्यालय समाविष्ट हैं| **परिशिष्ट-1**

2. विद्यार्थी समष्टि प्रस्तुत अध्ययन में विद्यार्थी समष्टि से तात्पर्य माध्यमिक स्तर अर्थात कक्षा 10 में पढने वाले चित्रकूट जनपद के समस्त विद्यार्थियों से है|

3.4 प्रतिदर्श एवं प्रतिचयन–

शोधकर्ता अपने शोध के लिए जीवसंख्या से निश्चित संख्या में कुछ सदस्यों या वस्तुओं का चयन कर लेता है, इस चयनित संख्या को ही व्यवहारपरक शोध में प्रतिदर्श कहा जाता है| शिक्षा के क्षेत्र में न्यादर्श का विशेष महत्व है। न्यादर्श के बिना शोधकार्य को शीघ्रता तथा सरलता से पूरा करना कठिन है। जनसंख्या की सभी इकाइयों का अध्ययन कष्ट साध्य एवं अधिक खर्चीला होता है| अनुसन्धान कार्य में अनुसंधानकर्ता जनसंख्या की समस्त इकाइयों में से कुछ एक का अध्ययन करके सम्पूर्ण इकाइयों का निष्कर्ष निकाल लेता है अर्थात न्यादर्श समूचे इकाई समूह का पर्याप्त प्रतिनिधित्व करता है|

न्यादर्श के प्रयोग से अध्ययन कार्य व्यावहारिक एवं समय, श्रम, साधन व धनराशि की दृष्टि से मितव्ययी हो जाता है| न्यादर्श के प्रयोग से परिणाम शुद्ध एवं शीघ्रता से प्राप्त हो जाते हैं|

गुड तथा हैट के अनुसार, "एक प्रतिदर्श एक बड़े समग्र का छोटा प्रतिनिधि है।"

करलिंगर के अनुसार, "प्रतिदर्श समग्र जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाले अंशों का चयन है।"

बोगार्ड्स (1954) के अनुसार, "पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार एक समूह में से निश्चित प्रतिशत की इकाइयों का चुनाव ही प्रतिचयन कहलाता है|"

प्रतिदर्श प्रणाली के गुण–

1. न्यादर्श प्रणाली में अपेक्षाकृत थोड़ी इकाइयों का अध्ययन किया जाता है इसलिए इसमें समय की बचत होती है।
2. यदि अनुसंधान कार्य के लिए सरकार द्वारा कोई योजना नहीं चलाई जा रही है तो अनुसन्धान के लिए पर्याप्त धन एकत्र करना एक समस्या बन जाती है। न्यादर्श प्रणाली से इकाइयों की संख्या कम होने के कारण धन की पर्याप्त बचत होती है|
3. इस प्रणाली में इकाइयों की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है, इसलिए अधिक समय तक अधिक सूक्ष्म रूप से अध्ययन तथा विवेचन किया जा सकता है|
4. न्यादर्श प्रणाली द्वारा एकत्र सूचना पर्याप्त सीमा तक शुद्ध होती है|
5. न्यादर्श प्रणाली में इकाइयों की संख्या कम होने से अनुसंधान का संगठन भी अधिक सरल रहता है।

प्रतिचयन (Sampling) –

प्रतिचयन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा प्रतिदर्श का चयन किया जाता है अर्थात प्रतिदर्श चयन करने की प्रविधि को प्रतिचयन या प्रतिदर्शन कहा जाता है।

करलिंगर ने प्रतिदर्शन को परिभाषित करते हुए लिखा है- "किसी जीव संख्या या समष्टि से उस जीवसंख्या या समष्टि के प्रतिनिधि के रूप में किसी भी संख्या का चयन प्रतिचयन या प्रतिदर्शन कहलाता है।"

3.5 न्यादर्श की विधियाँ–

न्यादर्श के चयन हेतु अनेक विधियों एवं प्रारूपों का विकास किया गया है परन्तु उन्हें सामान्यतः 2 वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1. सम्भाव्य न्यादर्श (Probability Sample)
2. असम्भाव्य न्यादर्श (Non-Probability Sample)

3.5.1. सम्भाव्य न्यादर्श–

न्यादर्श के चयन में जब ऐसी विधि का प्रयोग करते हैं जिससे जनसंख्या के प्रतिनिधित्व की संभावना होती है तब उसे संभाव्य न्यादर्श की संज्ञा दी जाती है।

जी.सी. हेलमेस्टर के अनुसार–

"सम्भाव्य न्यादर्श उसे कहते हैं जिसमें जनसंख्या के प्रत्येक सदस्य को न्यादर्श में सम्मिलित होने या चयन किये जाने की समान संभावना होती है। एक सदस्य का दूसरे सदस्य पर कोई भी बंधन नहीं होता है| प्रत्येक सदस्य पूर्णरूप से स्वतंत्र होता है।"

साधारण अनियमित न्यादर्श (Simple Random Sample)–

यह न्यादर्श अनियमितता विधि द्वारा चुना जाता है| इस चयन विधि में जनसंख्या अथवा समुदाय के प्रत्येक व्यक्ति को न्यादर्श में चयन के लिए समान अवसर प्राप्त होता है| इस न्यादर्श में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के चयन पर प्रभाव नहीं डालता है|

क्रमिक न्यादर्श (Systematic Sample)–

यह विधि अनियमित न्यादर्श से सुधरी हुई प्रविधि है, इसमें जनसंख्या की जानकारी आवश्यक होती है। इसमें सभी के नामों की सूची या तो वर्णमाला के अनुसार या अन्य विधि से तैयार कर लेते हैं, सभी नाम एक ही विधि से लिखे जाते हैं| अब सूची में से एक क्रम से व्यक्ति अथवा इकाई का चयन करते जाते हैं जैसे हर 10वां व्यक्ति न्यादर्श में सम्मिलित कर लिया |

बहुरूपी न्यादर्श (Multi Sample)–

इस विधि में दो या दो से अधिक न्यादर्श का चयन करते हैं।

समूह न्यादर्श (Cluster Sample) -

जब जनसंख्या अधिक विस्तृत हो तथा दूर-दूर तक फैली हुई हो तो ऐसी स्थिति में उपर्युक्त विधियों द्वारा अध्ययन करना संभव नहीं होता है| अतः हम इस जनसंख्या का एक बड़ा समूह बना लेते हैं, यह बड़े समूह अनियमित विधि द्वारा या वर्ग अनियमित विधि द्वारा बनाये जाते हैं| इस बड़े समूह को ही न्यादर्श माँ लेते हैं तो इसे समूह न्यादर्श कहते हैं।

3.5.2 असम्भाव्य न्यादर्श–

जब न्यादर्श के चयन में संभावना का कोई स्थान नहीं होता है तब उसे असंभाव्य न्यादर्श कहते हैं। इसमें न्यादर्श और जनसंख्या एक ही होते हैं, स्थानीय शोध कार्यों में इसका प्रयोग किया जाता है| इसमें सामान्यीकरण नहीं किया जाता है।

आकस्मिक न्यादर्श (Accidental Sample) –

इसमें जनसंख्या में जो भी व्यक्ति आसानी से उपलब्ध हो जाए ऐसे न्यादर्श को आकस्मिक न्यादर्श कहते हैं। माना कि किसी समस्या के प्रति बुन्देलखंड विश्वविद्यालय के छात्रों की अभिवृत्ति जानना है तो हम बुन्देलखंड विश्वविद्यालय तथा उससे सम्बन्धित महाविद्यालयों के किन्हीं छात्रों से उनकी राय पूँछते जाएँ, इस प्रकार यह न्यादर्श आकस्मिक न्यादर्श होगा|

सोद्देश्य न्यादर्श (Purposive Sample)–

कुछ उद्देश्य कार्य न्यादर्श की प्रतिनिधित्वता नहीं चाहते, उन्हें अपने विशेष उद्देश्य के लिए एक विशेष उद्देशीय न्यादर्श चाहिए | जैसे कि बढ़ती हुई मंहगाई का प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों पर क्या प्रभाव पड़ेगा | इसका सर्वेक्षण करना हो तो इसके लिए एक विशिष्ट उद्देश्य के लिए एक विशिष्ट समूह की आवश्यकता होगी | यह जनसंख्या

का प्रतिनिधि होग| प्रभावशाली शिक्षकों के व्यक्तिगत गुणों के लिए भी इसी विधि का प्रयोग किया जाएगा| **सम्पूर्ण न्यादर्श (Quota Sample)–**

यह वर्गबद्ध न्यादर्श का ही एक रूप है केवल इकाइयों के चयन प्रविधि में अंतर है इसे भी वर्गों में बांटते है यह सामाजिक सर्वेक्षण एवं जनसंख्या सर्वेक्षण आदि में प्रयुक्त होता है। इसमें सामान्य न्यादर्श एवं निर्णात्मक न्यादर्श दोनों ही का समावेश रहता है। इस न्यादर्श क्रिया में हम उन विशेषकों को ध्यान में रखकर सम्पूर्ण कोष को निर्धारित करते हैं जो कि इकाइयों में स्पष्ट रूप में दृष्टिगोचर होते हैं|

निर्णित न्यादर्श (Judgement Sample)–

अनुसंधानकर्ता अपने किसी उद्देश्य के लिए स्वयं निर्णित इकाइयों के समूह का चयन करता है, इस समूह को निर्णित न्यादर्श कहते हैं|

3.6 प्रस्तुत अध्ययन की न्यादर्श विधि–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधार्थी ने सुविधानुसार प्रतिदर्श चयन विधि का प्रयोग करते हुए आंकड़े एकत्र किये हैं| शोधकर्ता ने सर्वप्रथम चित्रकूट जनपद में स्थित समस्त माध्यमिक विद्यालयों की सूची प्राप्त की, तत्पश्चात 10 शहरी माध्यमिक विद्यालय व 10 ग्रामीण माध्यमिक विद्यालयों की पर्ची बनाकर अलग-अलग डिब्बे में डालकर पर्चियों को ठीक से मिला दिया। इसके बाद 10 वर्षीय बालक से उन अलग-अलग डिब्बों में से 2-2 विद्यालयों की पर्चियों को निकलवाया। इस प्रकार प्रतिदर्श का चयन किया गया।

माध्यमिक विद्यालय–

शहरी विद्यालय –

1.चित्रकूट इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट

2.राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट

ग्रामीण स्तर के विद्यालय–

1.राजकीय इंटर कॉलेज, बरगढ़, मऊ – चित्रकूट

2.बालिका इंटर कॉलेज, मऊ-चित्रकूट

3.7 न्यादर्श का विवरण–

प्रस्तुत लघुशोध अध्ययन में चित्रकूट जनपद के 2 शहरी व 2 ग्रामीण माध्यमिक स्तर के विद्यालयों से 100 विद्यार्थियों का चयन किया गया है जिसमें से 50 छात्राएं शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों से व 50 छात्र शहरी तथा ग्रामीण विद्यालयों से लिए गए हैं। इस प्रकार इन छात्र छात्राओं का चयन सुविधानुसार विधि से किया गया है|

चित्र 3.7 न्यादर्श वितरण
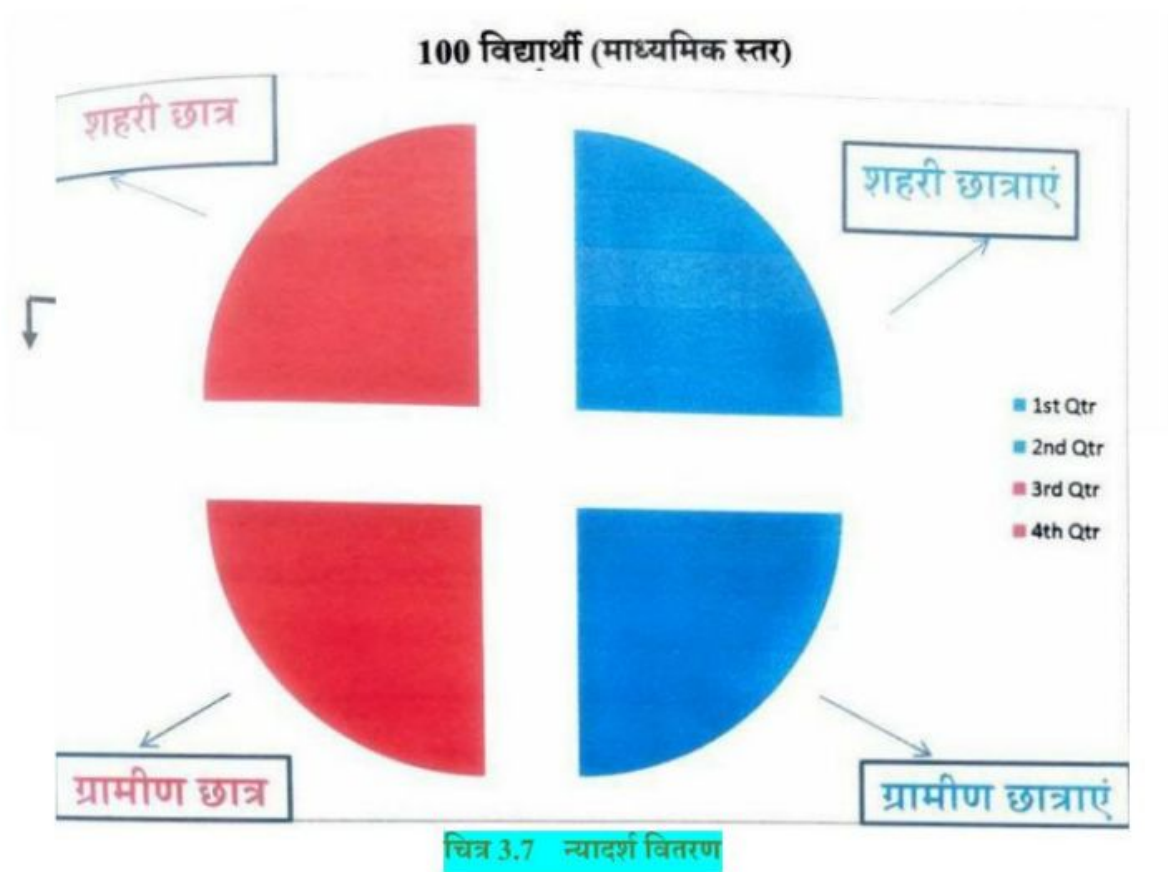
क्रमांक	विद्यालय का नाम	छात्र	छात्राएं
1	राजकीय इन्टर कॉलेज, बरगढ़,मऊ-चित्रकूट	25	
2	बालिका इन्टर कॉलेज,मऊ-चित्रकूट		25

3	चित्रकूट इंटर कॉलेज,कर्वी, चित्रकूट	25	
4	राजकीय बालिका इंटर कॉलेज, कर्वी, चित्रकूट		25

आकड़ों को एकत्रित करने के लिए प्रत्येक विद्यालय के प्रधानाचार्य से अनुमति प्राप्त कर समय निश्चित कर लिया फिर प्रश्नावली विधि के माध्यम से शोधकर्ता द्वारा प्रत्येक विद्यालय में जाकर छात्र/ छात्राओं द्वारा उसे भरवाकर आंकड़ों को एकत्र किया गया। निरीक्षणकर्ता दिए गए निर्देशों को जोर से पढ़ता है और विद्यार्थियों को ठीक प्रकार से प्रश्नावली भरने के लिए उचित निर्देश देता है।

3.8 अध्ययन के चर–

मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक शोध में चर का काफी महत्वपूर्ण स्थान होता है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, वह है जिसका मान परिवर्तित होता रहता है, शोध में चर विशिष्ट अर्थ में प्रयोग होता है-**"चर से तात्पर्य किसी वस्तु, घटना तथा चीज के उन गुणों से होता है, जिन्हें मापा जा सकता है |"**

किसी व्यक्ति या वस्तु या घटना के ऐसे गुण या स्थिति को चर कहते हैं, जिसमें दो बातें उपलब्ध होती हैं-एक तो यह कि उसमें मात्रात्मक परिवर्तन संभव हो तथा उसे मापा जा सके दूसरी बात यह कि वह स्वयं प्रभावित हो सके अथवा दूसरे को प्रभावित कर सके | भिन्न-भिन्न मनोवैज्ञानिकों ने चर को परिभाषित करने का प्रयास किया है।

डी. एमैटो (1970) के अनुसार–

"किसी प्राणी, वस्तु या चीज के मापने योग्य गुणों को चर कहा जाता है।"

गैरेट (1970) के अनुसार–

"चर वह लक्षण या गुण है जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है।"

चरों के प्रकार—

चर मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं।

3.8.1 स्वतंत्र चर–

उन चरों को स्वतंत्र चर कहा जाता है, जिनमें अनुसंधानकर्ता जोड़-तोड़ करता है तथा उस जोड़-तोड़ का आश्रित चर पर क्या प्रभाव पड़ा? यह भी देखता है।

करलिंगर के अनुसार–

"स्वतंत्र चर किसी आश्रित चर का अनुमानित कारक है तथा आश्रित चर स्वतंत्र चर का प्रभाव है " अनुमानिक

एडवर्ईस(1968) के अनुसार–

"वह चर जिस पर अध्ययनकर्ता का नियंत्रण होता है, स्वतंत्र चर कहलाता है |"

इन परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि स्वतंत्र चर वह चर है जिस पर प्रयोगकर्ता का पूरा नियंत्रण रहता है तथा जिसे प्रयोगकर्ता प्रत्यक्ष रूप से चयन द्वारा घटाता बढ़ाता है। वह यह इस उद्देश्य से करता है कि व्यवहार माप पर इसके प्रभाव का अध्ययन कर सके|

प्रस्तुत शोध में स्वतंत्र चर निम्नानुसार है

(अ) लिंग छात्र

छात्राएं

(ब) पाठ्यशाला के प्रकार

ग्रामीण माध्यमिक विद्यालय

शहरी माध्यमिक विद्यालय

3.8.2 आश्रित चर–

आश्रित चर वह चर होते हैं जिसके बारे में शोधकर्ता कुछ पूर्व कथन करता है। यह स्वतंत्र चर पर निर्भर होता है। स्वतंत्र चर के घटने बढ़ने पर कोई तत्व घट बढ़ जाए तो इसे आश्रित चर कहते हैं।

हिल के अनुसार–

"आश्रित चर वह है जिसके बारे में हम पूर्व कथन करते हैं।"

•केंटोविज तथा रोडिगर के अनुसार–

"आश्रित चर वह है जो प्रयोगकर्ता द्वारा निरीक्षण किया जाता है तथा रिकॉर्डहै किया जाता है।"

इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि आश्रित चर व्यवहार सम्बन्धी वह कारक है जिसका मनोवैज्ञानिक अनुसन्धान में मापन किया जाता है तथा वह चर स्वतंत्र के प्रदर्शित होने पर प्रदर्शित होता है, हटाने पर अदृश्य तथा परिवर्तित होने पर परिवर्तित हो जाता है

प्रस्तुत शोध में आश्रित चर निम्नानुसार है–

(अ) जागरूकता—

3.9 प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त शोध उपकरण–

किसी समस्या के अध्ययन के लिए नवीन एवं अज्ञात प्रदत्त संकलित करने के लिए अनेक विधियों का प्रयोग किया जाता है, अब प्रश्न यह उठता है कि आंकड़ों को एकत्र करने की तथा निरीक्षण करने के लिए कौन सी विधि या उपकरण का प्रयोग करें |

परिकल्पना को सिद्ध करने के लिए तथा प्रदत्तों को एकत्र करने के लिए अध्ययन विधि, साक्षात्कार विधि, अनुसूची विधि, प्रश्नावली विधि, मनोवैज्ञानिक परीक्षण आदि विधियों का प्रयोग किया जाता है।

3.10 उपकरण निर्माण–

प्रत्येक अनुसंधान के सन्दर्भ में प्रदत्तों के संग्रह हेतु कतिपय शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाता है| उपकरणों से प्राप्त नवीन एवं गुणात्मक प्रदत्त अनुसंधान में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं शोध उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनुसंधानकर्ता इन उपकरणों में से एक अथवा एक से अधिक उपकरणों का प्रयोग कर सकता है| प्रायः अनुसन्धान कार्य में दो प्रकार के उपकरण प्रयुक्त होते हैं।

i. मानकीकृत उपकरण
ii. स्वनिर्मित उपकरण

प्रस्तुत शोधकार्य के सन्दर्भ में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं था | अतः शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधकर्ता द्वारा एक नवीन उपकरण की आवश्यकता अनुभव की गयी। फलस्वरूप शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित नवीन उपकरण निर्मित करने का निश्चय किया और डॉ. राजीव अग्रवाल के निर्देशन में एक 48 प्रश्नों की प्रश्नावली निर्मित की। **परिशिष्ट**

प्रश्नावली–

इस शोध में शोधकर्ता ने प्रश्नावली विधि को अपने उपकरण के रूप में चयनित किया है और उसी से आंकड़े एकत्रित किये हैं।

लुण्ड वर्ग (1957) के अनुसार–

"मूलरूप में प्रश्नावली उत्तेजनाओं का समूह है, जिनके प्रति शिक्षित व्यक्तियों को दिखाया जाता है जिससे इन उत्तेजनाओं के प्रति उनके मौलिक व्यवहार का निरीक्षण किया जा सके।"

बार, डेविस तथा जॉनसन के अनुसार–

"प्रश्नावली प्रश्नों का व्यवस्थित संग्रह है, जिसे एक निर्देशित जनसंख्या को उत्तर प्राप्त करने के लिए दिया जाता है।"

गुड तथा हैट (1952) के अनुसार–

"सामान्य रूप से प्रश्नावली का अर्थ प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की उस प्रणाली से है जिसमें एक पत्रक प्रारूप या प्रपत्र का उपयोग किया जाता है, जिसे उत्तरदाता स्वयं भरता है "

वर्तमान शोधकार्य के सन्दर्भ में कोई मानकीकृत उपकरण उपलब्ध नहीं था | अतः शोधकार्य को पूर्ण करने हेतु शोधकर्ता द्वारा एक नवीन उपकरण की आवश्यकता अनुभव की गयी| फलस्वरूप शोधकर्ता ने वर्तमान अध्ययन से सम्बन्धित नवीन उपकरण निर्मित करने का निश्चय किया गया| इस प्रश्नावली प्रवृत्त में पूँछे गए सभी प्रश्नों के उत्तर हाँ और नहीं में हैं, वह जिस प्रश्न

का उत्तर उचित समझता है उसमें हाँ अथवा नहीं में से किसी एक पर सही का निशान लगाएगा। • निर्मित प्रश्नावली के प्रश्नों की सम्पूर्ण संख्या 48 है|

3.11 प्रदत्तों का संकलन तथा अंकीकरण–

2 शहरी तथा 2 ग्रामीण स्तर के चित्रकूट जनपद के माध्यमिक स्तर के विद्यालयों में अध्ययनरत 100 छात्र-छात्राओं को जो सुविधानुसार न्यादर्श विधि द्वारा चुने गए| शोधकर्ता ने सम्बन्धित विद्यालयों के प्रधानाचार्य से अपने उद्देश्य एवं कार्य के बारे में बताया और उनसे विनम्र निवेदन किया कि वह सभी छात्र/छात्राओं को बुलाकर इसके उद्देश्य के विषय में बता सकें शोधकर्ता ने विद्यार्थियों से उसी दिन अपने रिक्त समय में प्रश्नावली प्रपत्रों की पूर्ति करने के लिए कहा। इस प्रकार सभी प्रश्नावली के उत्तरों को प्राप्त कर लिया और साथ ही प्रत्येक प्रश्नावली के सम्पूर्ण प्रश्नों पर एक बार यह देख लिया गया कि कोई प्रश्न अपूर्ण तो नहीं रह गया है|

अंकीकरण–

प्रश्नावली में उत्तरदाता ने प्रत्येक का उत्तर हाँ अथवा नहीं में दिया है। यदि शिक्षार्थी ने तो उसे किसी प्रश्न का उत्तर हाँ में दिया है वहाँ पर (V) निशान बनाया है ATI अंक प्राप्त हुआ है और यदि नहीं पर (V) निशान लगाया है तो उसे शून्य अंक प्राप्त हुआ है। इस प्रकार परीक्षण में अधिकतम अंक 48 व न्यूनतम अंक 0 प्राप्त किये जा सकते हैं।

3.12 प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ–

किसी परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों को यदि ज्यों का त्यों प्रदर्शित कर दिया जाए तो उससे किसी भी प्रकार के परिणाम की प्राप्ति नहीं होती है| परन्तु जब उपयुक्त सांख्यिकीय विधि का प्रयोग करते हुए उनका विश्लेषण किया जाता है तो हमें एक सारगर्भित परिणाम की प्राप्ति होती है, जिसके फलस्वरूप हम परीक्षण से प्राप्त निष्कर्ष की व्याख्या कर पाते हैं, इसलिए सांख्यिकीय विधियों को 'रीढ़ की हड्डी' कहा जाता है। प्रश्नावली प्राप्त हो जाने पर समस्त आंकड़ों की सांख्यिकीय गणना करते हैं। पहले छात्र-छात्राओं के प्राप्तांकों को ज्ञात करते लेते हैं, तत्पश्चात मूल प्राप्तांकों को सारणीबद्ध करते हैं।

3.12.1 मध्यमान:–

सारणीयन के बाद आंकड़ों का मध्यमान या समान्तर माध्य निकालते हैं, समान्तर माध्य निकालने के लिए संख्याओं के योग में, संख्याओं की संख्या से भाग देते हैं और जो भागफल आता है उसे ही समान्तर माध्य या मध्यमान कहते हैं अर्थात जब किसी एक समूह के आंकड़ों अथवा प्राप्तांकों को जोड़ कर समूह की संख्या (N) से विभाजित किया और इस प्रकार जो राशि प्राप्त होती है, उस राशि को उस समूह के आंकड़ों का मध्यमान कहा जाता है| इसके लिए निम्नलिखित सूत्र का प्रयोग किया जाता है

$$M = \frac{\Sigma X}{N} \quad , \quad \boxed{M = AM + \left(\frac{\Sigma Fd}{N}\right) \times i}$$

जहाँ,

M= मध्यमान

Σx= प्राप्तांकों का योग

N = समूह में इकाइयों की संख्या

अनुसन्धान कार्य में मध्यमान का प्रयोग इसलिए किया जाता है, क्योंकि मध्यमान के द्वारा ही विस्तृत क्षेत्र का अध्ययन किया जाता है तथा इसके द्वारा प्राप्त निष्कर्ष मध्यांक मान से अधिक विश्वसनीय तथा शुद्ध होते हैं।

3.12.2 मानक विचलन :–

मानक विचलन को औसत विचलन का वर्गमूल भी कहते हैं। यह वितरण के औसत से सब विचलनों के वर्गों के वर्गमूल का औसत होता है। इसका मान सदैव धनात्मक होता है|

मानक विचलन का सूत्र–

$$\sigma d = \sqrt{\frac{(\sigma 1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N_2}}$$

जहाँ,

S.D. = मानक विचलन

[fd' = बारंबारता तथा विचलनों के वर्गों के गुणनफलों का योग

[fd = बारंबारता तथा विचलनों के गुणनफलों का योग

N = कुल आवृत्तियाँ

3.12.3 मानक त्रुटि की गणना–

किन्हीं दो स्वतंत्र न्यादर्शों के मध्यमानों के अंतर से मानक त्रुटि की गणना की जाती है|

मानक त्रुटि का सूत्र–

$$\sigma d = \sqrt{\frac{(\sigma 1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma 2)^2}{N_2}}$$

जहाँ,

01 = प्रथम न्यादर्श का मानक विचलन |

O2 = द्वितीय न्यादर्श का मानक विचलन |

N1 = प्रथम न्यादर्श का आकार |

N2 = द्वितीय न्यादर्श का आकार |

3.12.4 क्रांतिक अनुपात

दो बड़े समूहों के मध्यमानों के अंतर की सार्थकता की जांच करने के लिए क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया जाता है। अर्थात जब प्रतिदर्श की संख्या 30 से अधिक होती है तब क्रांतिक अनुपात की गणना की जाती है।

<u>क्रांतिक अनुपात का सूत्र–</u>

$$t = \frac{M_1 \sim M_2}{\sigma_d}$$

जहाँ.

T= * क्रांतिक अनुपात

M_1 = प्रथम न्यादर्श का मध्यमान |

M, = द्वितीय न्यादर्श का मध्यमान |

Od = मध्यमानों के अंतर की मानक त्रुटि |

<u>3.12.5 सार्थकता के स्तर–</u>

सार्थकता के कई स्तर होते हैं, लेकिन इसमें से दो स्तर सर्वमान्य हैं। जिसमें एक 0.05 तथा द्वितीय 0.01 होता है| 0.05 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात का मान 1.96 होता है, जबकि 0.01 सार्थकता स्तर पर क्रांतिक अनुपात का मान 2.58 होता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में परिकल्पनाओं के परीक्षण के लिए 0.05 विश्वास स्तर को लिया गया।

1.05 = 1.96

To1 = 2.58

अध्याय – चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं निर्वचन

अध्याय – चतुर्थ

आंकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण एवं विवेचनविवेचन–

प्रयुक्त प्रश्नावली में कुल 48 प्रश्न हैं, इन प्रश्नों को माध्यमिक स्तर के छात्र-छात्राओं के समक्ष प्रस्तुत किया गया है तथा मैंने उनके प्रत्युत्तर भरवाकर वापस ले लिया है व उनका मूल्यांकन किया गया है। प्रत्येक सही उत्तर के लिए। अंक तथा गलत उत्तर के लिए शून्य अंकन किया गया है।

छात्र-छात्राओं के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने, छात्र-छात्राओं में आस-पास के वातावरण को स्वच्छ रखने की जागरूकता का अध्ययन करने • तथा स्वास्थ्य व शिक्षा की जागरूकता का अध्ययन करने के लिए दिए गए उत्तर के आधार पर • प्राप्त अंकों की सभी परिकल्पना के लिए अलग-अलग सूची तैयार करके छात्र तथा छात्राओं का मध्यमान एवं मानक विचलन निकालकर उनके अंतर की प्रमाणिक त्रुटि निकालने के बाद सार्थकता स्तर ज्ञात करने के लिए क्रांतिक अनुपात का प्रयोग किया गया।

इसके पश्चात 0.05 विश्वास स्तर पर मध्यमानों की सार्थकता ज्ञात कर ली गयी। इनका विश्लेषण निम्नवत है–

4.1 प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण–

अनुसंधान समस्या से सम्बंधित परिकल्पना की रचना के पश्चात उनके परीक्षण तथा तर्कसंगत आंकड़ों के विश्लेषण की आवश्यकता होती है। अतः प्रस्तुत लघु शोध में प्रदत्तों का विश्लेषण निम्न प्रकार से किया गया है

तालिका 4.1

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का आवृत्ति वितरण

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता

वर्ग अंतराल	छात्र	छात्राएं	कुल आवृत्ति
14–16	5	6	11
11–13	27	32	59
8–10	8	5	13
5–7	7	3	11
2–4	3	4	8
i=3	**N=50**	**N=50**	**ΣN=100**

तालिका 4.1.1

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में छात्रों के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

वर्ग अंतराल	आवृत्ति (f)	विचलन (d)	fd	fd^2
14-16	5	+2	10	20
11-13	27	+1	27	27
8-10	8	0	0	0
5-7	7	-1	-7	7
2-4	3	-2	-6	12
i = 3			$\sum fd = 2$	$\sum fd^2 = 66$

मध्यमान $M_1 = AM + \left(\frac{\sum fd}{n}\right) \times i$

प्रमाणिक विचलन-S.D.$_1$ $= i\sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$

सारणी से -

AM = 9

$\sum fd = 24$

N = 50

i = 3

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर-

$M_2 = 10.44$

सारणी से-

$\sum fd^2 = 66$

$\sum fd = 24$

N = 50

i = 3

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर-

S.D.$_2$ = 3.12

तालिका 4.1.2

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में छात्राओं के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं प्रमाणिक विचलन

वर्ग अंतराल	आवृत्ति (f)	विचलन (d)	fd	fd^2
14-16	6	+2	12	24
11-13	32	+1	32	32
8-10	5	0	0	0
5-7	3	-1	-3	3
2-4	4	-2	-8	16
i = 3			$\sum fd = 33$	$\sum fd^2 = 75$

मध्यमान $M_1 = AM + \left(\frac{\sum fd}{N}\right) \times i$ प्रमाणिक विचलन-S.D.$_1$ $= i\sqrt{\frac{\sum fd^2}{N} - \left(\frac{\sum fd}{N}\right)^2}$

सारणी से -

$AM = 9$

$\sum fd = 33$

$N = 50$

$i = 3$

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर-

$M_1 = 10.98$

सारणी से-

$\sum fd^2 = 75$

$\sum fd = 33$

$N = 50$

$i = 3$

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर-

S.D.$_1$ = 3.09

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के प्राप्तांकों की प्रमाणिक त्रुटि-

$$\sigma d = \sqrt{\frac{(\sigma_1)^2}{N_1} + \frac{(\sigma_2)^2}{N_2}}$$

जहाँ-

$\sigma 1 = 3.12$

$\sigma 2 = 3.09$

$N = 50$

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर-

$$\boldsymbol{\sigma d = 0.61}$$

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के प्राप्तांकों का क्रांतिक अनुपात **(t) का** मान-

$$t = \frac{M_1 - M2}{\sigma_d}$$

$M1 = 10.44$

$M2 = 10.98$

$\sigma d = 0.61$

मान को सूत्र में रखकर हल करने पर -

$$\mathbf{t = 0.88}$$

तालिका 4.2

छात्र-छात्राओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में प्राप्तांकों का तुलनात्मक अध्ययन

अध्ययन समूह	संख्या (n)	मध्यमान (M)	प्रमाणिक विचलन (S.D.)	प्रमाणिक त्रुटि (σ)	क्रांतिक अनुपात (t)	परिणाम
छात्र	50	10.44	3.12	0.61	0.88	सार्थक नहीं
छात्रा	50	10.98	3.09			

उपरोक्त तालिका में प्रदत्त विश्लेषण से क्रांतिक अनुपात (t) का मान 0.88 प्राप्त हुआ, जो 0.01 के सार्थकता स्तर के मानक मान 2.58 से कम है, अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (छात्र-छात्राओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है) सार्थक नहीं होती है। अतः हमारे अध्ययन की शून्य परिकल्पना स्वीकृत हो जाती है, चूंकि परिकल्पना 0.01 के सार्थक स्तर पर सार्थक नहीं है इसलिए परिकल्पना 0.05 के सार्थक स्तर पर भी सार्थक नहीं होगी।

अध्याय- पंचम

उपादेयता, निष्कर्ष एवं सुझाव

अध्याय पंचम

निष्कर्ष, उपादेयता एवं सुझाव

5.1 शोध अध्ययन के निष्कर्ष–

शिक्षा जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है| शिक्षा हमें अंधकार से प्रकाश का, असत्य से सत्य का एवं बुराई से अच्छाई का ज्ञान कराती है| जॉन डीवी के अनुसार शिक्षा अनुभवों के सतत पुनर्निर्माण की वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति में उन समस्त क्षमताओं का विकास करती है, जो उसको अपने वातावरण को नियंत्रित करने एवं अपनी संभावनाओं को पूर्ण करने के योग्य बनाती है तथा उत्तम एवं समग्र शिक्षा न केवल लोगों को सशक्त बनाती है बल्कि व्यक्तिगत तथा सामूहिक अधिकारों के साथ-साथ सामाजिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में भाग लेने और उत्पादक रोजगार के लिए अवसरों को सृजित करती है अर्थात शिक्षा सामाजिक जीवन को प्राणवायु देती है तथा आर्थिक विकास को उत्प्रेरित करती है|

अतः शिक्षारुपी धुरी के चारो ओर ही किसी भी राष्ट्र के विकास का चक्र घूमता है| राष्ट्रजनों का शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक विकास करके उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करने में सक्षम बनाना शिक्षा का अमूल्य उपहार है| शिक्षा का वास्तविक लक्ष्य यह है कि इसके द्वारा मनुष्य का चारित्रिक एवं सृजनात्मक विकास कर उसे एक उपयोगी नागरिक बनाना | शिक्षा से केवल सफल जीवन का ज्ञान ही नहीं होना चाहिए बल्कि इसके द्वारा कुछ शाश्वत मूल्यो. आदर्शों तथा सिद्धांतों का भी पता चलना चाहिए|

माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का वास्तुत लघु शोध का अध्ययन विषय अर्थात शोध की समस्या है-"चित्रकूट जनपद के अध्ययन।"

प्रस्तुत समस्या का विश्लेषण करके दिए गए उद्देश्यों के आधार पर परिकल्पना का का निर्माण करके तदुपरांत परिकल्पना परीक्षण करके निम्नलिखित निष्कर्ष निकाले गए|

उद्देश्य (O_1) –

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति छात्र-छात्राओं में जागरूकता का अध्ययन करना

परिकल्पना H_1–

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति छात्र-छात्राओं की जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है|

निष्कर्ष–

तालिका 4.2 में प्रदत्त विश्लेषण का क्रान्तिक अनुपात का मान 0.88 प्राप्त हुआ है, जो 0.05 के सार्थकता स्तर के मानक मान 196 से कम है। अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना (स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता का छात्र-छात्राओं में कोई सार्थक अंतर नहीं है) सार्थक नहीं है।

अतः अध्ययन की शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है चूंकि परिकल्पना 0.05 सार्थकता स्तर पर सार्थक नहीं है, इसलिए 0.01 सार्थकता स्तर पर भी सार्थक नहीं होगी |

अतः यह कहा जा सकता है कि छात्र-छात्राओं में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

5.2 शोध अध्ययन का शैक्षिक निहितार्थ–

व्यक्ति समाज की सबसे छोटी इकाई होती है तथा व्यक्तियों में परस्पर भिन्नता का होना प्रकृति की स्वाभाविक देन है। संसार के कोई भी दो व्यक्ति पूर्णरूपेण एक दूसरे के समान नहीं होते हैं, व्यक्तियों में परस्पर कुछ न कुछ अंतर अवश्य होता है यह अन्तर व्यक्ति के रुचियों में भी परिलक्षित होता है तथा समाज में प्रत्येक स्तर का व्यक्ति निवास करता है भारत देश में विद्यार्थियों, नागरिकों, श्रेष्ठजनों की अभिवृत्तियों, रुचियों, व्यवहारों को जानने का प्रयास प्रस्तुत अध्ययन स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन में किया गया है। स्पष्ट है कि यह शोधकार्य अल्प समय में श्रम व धन की सीमाओं के अन्दर किया गया है

फिर भी इस शोध कार्य का शैक्षिक स्तर परिलक्षित होता है शोध एक ऐसा व्यवस्थित एवं नियंत्रित अध्ययन है जिसके अंतर्गत उपयुक्त सांख्यिकीय व वैज्ञानिक विधियों का प्रयोग किया जाता है तथा प्राप्त परिणामों से वैधानिक निष्कर्षों से नियमों तथा सिद्धांतों की रचना एवं पुष्टि की जाती है। अनुसन्धान द्वारा प्राप्त ज्ञान विशुद्ध, संगठित तथा

क्रमबद्ध होता है। अनुसंधान नए तथ्यों को खोजकर अज्ञानता समाप्त करने का एक उपकरण है, यह निम्नलिखित दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है –

1. उन्नत स्वच्छता व्यवहारों को अपनाने के लिए प्रोत्साहन देना
2. ग्रामीण विकास, स्वास्थ्य, पर्यावरण और सुभेद्य वर्गों से सम्बन्धित सार्वजानिक क्षेत्र की एजेन्सियों में सहयोग को प्रोत्साहित करना और समर्थ बनाना |
3. कार्यनीति के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए व्यापार, शिक्षा और स्वैच्छिक क्षेत्र के भागीदारों के साथ मिलकर कार्य करना, इन कार्यनीतियों की सफलता हेतु निम्नलिखित लक्ष्य भी बनाये गए हैं|
   अ. सम्पूर्ण स्वच्छता पर्यावरण का सृजन: 2019 तक एक स्वच्छ परिवेश की प्राप्ति और खुले में शौच की समाप्ति, जहाँ मानव मल अपशिष्ट का सुरक्षित रूप से प्रबंधन और निपटान किया जाता है।

ब. उन्नत स्वच्छता प्रक्रियाएं अपनाना : 2020 तक ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले सभी लोगों को खास कर बच्चों और देखभालकर्ताओं द्वारा हर समय सुरक्षित स्वच्छता प्रथाएं अपनाना |

स. ठोस और तरल अपशिष्ट प्रबंधन: 2022 तक ठोस और तरल अपशिष्ट का प्रभावी प्रबंधन इस प्रकार करना कि गाँव का परिवेश हर समय स्वच्छ बना रहे|

5.3 प्रस्तुत शोध अध्ययन के सुझाव–

प्रस्तुत अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना तथा सफल स्वच्छ भारत अभियान के क्रियान्वयन में होने वाली समस्याओं का पता लगाना तथा उन्हें दूर करने हेतु आवश्यक सुझाव प्रस्तुत करना है| कोई भी अनुसंधान तभी सार्थक हो सकता है जब उसका शैक्षिक महत्त्व हो तथा उसका लाभ समाज और विद्यार्थी उठा सकें। शोधकर्ता ने अपना शोधकार्य चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता को लेकर सर्वेक्षित कर किया है।

प्रस्तुत शोधकार्य में मऊ व कर्वी ब्लाक के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रस्तुत प्रति जागरूकता का अध्ययन किया गया है| अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि सभी विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान का सफल क्रियान्वयन नहीं हो पा रहा है| यह शोध कार्य अल्प समय में श्रम व धन की सीमाओं के अन्दर किया गया है। अध्ययन के निम्नलिखित आदर्श सुझाव हैं

5.3.1 शिक्षको हेतु ससुझा–

स्वच्छ भारत अभियान कार्यकर्म में शिक्षक की प्रमुख भूमिका है। स्वच्छ भारत अभियान की सफलता और निरंतरता के लिए उनकी समर्पित भागीदारी और व्यक्तिगत मान्यता महत्वपूर्ण है| इसलिए यह महत्वपूर्ण है कि शिक्षक स्वास्थ्य कार्यक्रम के साथ-साथ स्वच्छता शिक्षा को नियमित पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के महत्व की सराहना और प्रसार करें | शिक्षकों को चाहिए कि वह स्वच्छ भारत अभियान के सफल क्रियान्वयन में शः योग करने हेतु विद्यालय में निम्नलिखित क्षेत्रों में आवश्यक सुधार करें|

i. विद्यालयों के कक्षा-कक्षों की नियमित साफ़-सफाई निश्चित करें। ii. वृक्षारोपण कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया जाना चाहिए |

ii. विद्यार्थियों के शौचालयों की नियमित साफ़-सफाई करवानी चाहिए |

iii. विद्यार्थियों के बाल व नाखूनों की समय-समय पर जांच करनी चाहिए | v. विद्यार्थियों के लिए साफ़-स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था सुनिश्चित की जानी चाहिए|

vi. विद्यालय में कूड़ा आदि के उचित निपटान हेतु डस्टबिन की व्यवस्था होनी चाहिए| vii. चबाना, धूम्रपान करना, थूकना आदि परिसर के अन्दर वर्जित किया जाना चाहिए|

viii. खाद्य सामग्री का संधारण अत्यंत स्वच्छता के साथ किया जाना चाहिए। ix. नालियों, सीवेज पाइप और अपशिष्ट पानी की लाइनों में रूकावट की जांच होनी चाहिए।

5.3.1 विद्यार्थियों हेतु सुझाव–

स्वच्छ भारत अभियान की सफलता और निरंतरता के लिए छात्रों की समर्पित भागीदारी और व्यक्तिगत मान्यता महत्वपूर्ण है। छात्रों हेतु निम्नलिखित आदर्श सुझाव हैं

i. पेशाब और शौच के लिए शौचालयों का प्रयोग करें। ii. शौच के बाद साबुन से हाथ धोना चाहिए|

ii. नाखून काटना |

'से रोज दांत ब्रश से साफ करना |

• पेशाब और शौच के बाद, शौचालय में पानी डालना या फ्लश बटन का उपयोग करना | शरीर का साबुन से नियमित दैनिक स्नान करना |

ii. विद्यालय में वृक्षारोपण व सफाई जैसे अभियानों में सहभागिता देना चाहिए। VT. 1411. कचरे को डस्टबिन में डालना चाहिए|

ix. स्वच्छ पेयजल का ही उपयोग करना चाहिए।

5.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव–

शोधकर्ता द्वारा संपन्न किये गए लघु शोध अध्ययन शीर्षक "चित्रकूट जनपद के माध्यमिक विद्यालयों में स्वच्छ भारत अभियान के प्रति विद्यार्थियों की जागरूकता का अध्ययन |" को पूर्णतः प्रदान करने के दौरान कुछ नवीन अनुभवों एवं विचारों को अनुभूत किया गया | इन नवीन अनुभवों तथा विचारों पर भविष्य के शोधकर्ताओं द्वारा

शोध कार्य किये जा सकते हैं| वस्तुतः शोधकर्ता इन्हें भावी अध्ययन हेतु सुझावों के रूप में भविष्य के शोधार्थियों के सहायतार्थ प्रस्तुत कर रहा है|

1. अध्ययन के लिए बड़े न्यादर्श का चयन किया जा सकता है, इसलिए अध्ययन में विद्यार्थियों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन उत्तर प्रदेश के विद्यार्थियों की जागरूकता पर आधारित है,

2.यह शोध विभिन्न राज्यों के विद्यार्थियों तथा आम नागरिकों पर भी किया जा सकता है।

3. प्रस्तुत लघु शोध में केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को ही लिया गया है, इसमें उच्च माध्यमिक स्तर या अन्य स्तर के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित किया जा सकता है|

4. मूल्यांकन का क्षेत्र इतना व्यापक है कि सभी विषयों तथा सभी राज्यों पर पृथक-पृथक शोध किया जाए तो अधिक उचित होगा| शोधकर्ता भारत के प्रत्येक राज्य तथा प्रत्येक जिले का पृथक-पृथक मूल्यांकन कर सकता|

5. प्रस्तुत अध्ययन के फलस्वरूप स्वच्छता अभियान की प्रगतिशीलता का अध्ययन

किया जा सकता है।

6. प्रस्तुत अध्ययन में केवल हिंदी माध्यम के विद्यार्थियों को लिया गया है, इसमें अंग्रेजी, उर्दू व अन्य भाषाओं के विद्यार्थियों को भी सम्मिलित कर अध्ययन किया जा सकता है
7. प्रस्तुत अध्ययन में केवल नियमित छात्रों को लिया गया है। इसमें व्यक्तिगत, पत्राचार व मुक्त विद्यालय के विद्यार्थियों को सम्मिलित कर अध्ययन किया जा सकता है|

8. प्रस्तुत अध्ययन में केवल दिवा छात्रों को लिया गया है| इसमें आवासीय विद्यार्थियों को सम्मिलित कर शोध किया जा सकता है

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. पाण्डेय, के. पी. (2010) : पर्यावरण शिक्षा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी |
2. डॉ. संध्या मिश्रा''वत्स' (2012) पर्यावरणीय शिक्षा आर. लाल. बुक डिपो, मेरठ |
3. डॉ. डी. एन. श्रीवास्तव (2009) : अनुसंधान विधियाँ, साहित्य प्रकाशन, आगरा |
4. अरुण कुमार सिंह, (2016) : मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ
5. पाण्डेय, के.पी. (2006) : शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी विश्वविद्यालय प्रकाशन|
6. बुच, एम. बी. : सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, बड़ोदा वॉल्यूम नंबर 3,4 सोसाइटी फॉर एजुकेशन|
7. कपिल, एच.के. (2008) : अनुसन्धान विधियाँ, आगरा एच.पी. भार्गव हाउस|
8. बुच, एम.बी. : थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन, (एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली) |

पत्र-पत्रिकाएं–

1. स्वच्छ भारत अभियान : चुनौतियाँ और समाधान योजना अक्टूबर 2014 | 2017 |

2. स्वच्छता : ग्रामीण विकास को समर्पित, कुरुक्षेत्र अक्टूबर

3. 2013 गावों में पेयजल और स्वच्छता : ग्रामीण विकास को समर्पित, कुरुक्षेत्र जनवरी

4. स्वच्छ सर्वेक्षण : पेयजल एवं स्वच्छता मंत्रालय भारत सरकार, 2016 |

5. 2017 स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार

6. मिशन अन्त्योदय ग्राम समृद्धि एवं स्वच्छता पखवाड़ा: ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार 2017 | वार्षिक
7. रिपोर्ट 2011: स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार |

8. डॉ. राठी प्रवीण : अभियानों के अभियान पर तहलका, नवम्बर 2014|

9. स्वच्छता, विकास और सामाजिक परिवर्तन सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय योजना, जनवरी 2015

10. डोगरा, भारत 2013 : जनसत्ता, स्वास्थ्य नीति की बीमारी, 2013|

11. पी.आई.बी. रिलीज : जल संसाधन मंत्रालय, 2014|

12. पी.आई.बी. रिलीज : पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, 2014|

13. व्यास, हरिप्रसाद 1963 ग्राम स्वराज-महात्मा गाँधी, नवजीवन प्रकाश मंदिर, अहमदाबाद |

14. स्वच्छता के लिए व्यवहार में बदलाव जरूरी: दैनिक जागरण 26.10.2017, कानपुर संस्करण |

15. स्वच्छता एक संस्कार: 03.10.2017, कुरुक्षेत्र पत्रिका |

16. मोदी के शौचालय अभियान में रमा संयुक्त राष्ट्र : दैनिक जागरण 21.11.2016, झाँसी संस्करण |

17. सांसद निधि का 50 फीसदी स्वच्छता मिशन में होगा खर्च : दैनिक जागरण 24.02.2018, इलाहाबाद संस्करण।

18. मन्दाकिनी को अविरल निर्मल बनाने के लिया संकल्प: हिन्दुस्तान समाचारपत्र 12.03.2018, इलाहाबाद संस्करण |

19. Website References www.ncert.nic.in

www.swachchhbharatmission.in www.chitrakoot.nic.in

परिशिष्ट

स्वच्छता जागरूकता परिसूची

शोध निर्देशक

डॉ. राजीव अग्रवाल

(एसोसिएट प्रोफेसर)

शिक्षक-शिक्षा

अतर्रा पी.जी. कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

शोधार्थी

शशि शेखर

(एम. एड. छात्र)

अतर्रा पी. जी. कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

कृपया निम्न सूचनाएँ भरिये

नाम… … .. … …. … … .. … ….. …..पिता का नाम… . … …. … … .. … …. … … .. … .. …

लिंग.. … . … …. … … .. … .. … … .. … .. कक्षा…. …. … . … …. … … .. … .. .. … ..

स्कूल/कॉलेज का नाम.. … …. … … .. … .. … .. …. … . … …. … … .. … .. .. … ..

<u>निर्देश–</u>

आगे के पृष्ठों पर स्वच्छ भारत अभियान से सम्बन्धित 48 कथन दिए गए हैं। आप इन कथनों को | ध्यानपूर्वक पढ़ें। प्रत्येक कथन के सामने 'हाँ और नहीं' लिखा है, आपको इन दोनों में से किसी एक के | नीचे सही (√) का निशान लगाना है| यदि कथन में लिखी बात आपके सम्बन्ध में सत्य है तो 'हाँ' के | नीचे (√) का निशान लगायें, और यदि असत्य है तो 'नहीं' के नीचे (√) लगायें| आप निःसंकोच उत्तर दें| समय का बंधन नहीं है परन्तु यथाशीघ्र समाप्त करने का प्रयास करें। आपका निष्ठापूर्ण सहयोग बहुत ही महत्वपूर्ण है| आपके द्वारा दी गयी जानकारी पूर्णतया गोपनीय रहेगी, जिसका उपयोग केवल शोध कार्य में किया जाएगा|

क्रमांक कथन	हाँ	नही
1- स्वच्छ भारत अभियान का शुभारम्भ 2 अक्टूबर 2014 को किया गया। 2- स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत श्री नरेन्द्र मोदी जी ने की थी। 3- क्या आप स्वच्छ भारत अभियान के बारे में जानते हैं? 4- +2 करोड़ राशि का स्वच्छ भारत कोष बनाया गया। 5- पी. एम. नरेन्द्र मोदी ने इस अभियान के अंतर्गत 9 रत्नों को शामिल किया। 6- स्वच्छता अभियान को महात्मा गाँधी जी की 150वीं जयंती में सफल बनाने का लक्ष्य रखा गया है। 7- स्वच्छ भारत अभियान का लक्ष्य विकासोन्मुखी है। 8- स्वच्छ भारत से ही साकार होगा स्वस्थ भारत का सपना। 9. स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए दिलाई गयी शपथ से आप परिचित हैं। 10- स्वच्छता का आशय बाहरी स्वच्छता के साथ-साथ आंतरिक स्वच्छता से है। 11- स्वच्छता अभियान से पर्यावरण को बहुत अधिक लाभ होगा। 12- स्वच्छ भारत अभियान को गृह मंत्रालय द्वारा संचालित किया जा रहा है 13- इस अभियान को शुरुआत में देश के 50 शहरों में लागू किया गया था। 14- स्वच्छ भारत दौड़ को नरेन्द्र मोदी जी ने झंडी दिखाई। 15- भोजन से पूर्व आप अपने हाथ धोते हैं। 16- शौच के लिए शौचालय का प्रयोग करते हैं। 17- आपके विद्यालय में शुद्ध पेयजल की व्यवस्था है। 18-आपके घर में शौचालय है?		

19- क्या आपके विद्यालय में स्वच्छ भारत अभियान से सम्बंधित जानकारियां दी जाती हैं। 20- आप अपने दाँतों की नियमित सफाई करते हैं। 21- आपके विद्यालय में स्वच्छता दिवस का आयोजन किया जाता है। 22-आप स्वच्छता से सम्बंधित गतिविधियों में भाग लेते हैं। 23. क्या विद्यालय के प्रत्येक कक्षाओं में डस्टबिन की व्यवस्था है? 24- स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने वाराणसी में साफ-सफाई के साथ की थी। 25- वित्त मंत्रालय द्वारा प्रत्येक गाँव को 5 वर्षों के लिए राशि प्रदान की जायेगी। 26- स्वच्छ भारत अभियान से देशभर में 50 लाख शौचालयों का निर्माण कराया जायेगा | 27- यू.एन. रिपोर्ट के सुविधा से वंचित है | अनुसार देश की लगभग 70% जनसंख्या शौचालय 28- शहरी स्तर पर 50 प्रतिशत जनसंख्या शौचालय सुविधा से वंचित है| 29- ग्रामीण स्तर पर 60 प्रतिशत जनसंख्या शौचालय सुविधा से वंचित है। 30- आपके विद्यालय में इस वर्ष वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया 31- इस अभियान का सार्थक लक्ष्य 2020 में पूरा करने का संकल्प है। 32- क्या आप स्वच्छ विद्यालय पुरस्कार योजना से परिचित हैं? 33- क्या आपके विद्यालय में लड़के एवं लड़कियों के लिए अलग-अलग • शौचालयों की व्यवस्था है? 34- क्या विद्यालय की कक्षाओं की सफाई नियमित रूप से होती है। 35- क्या विद्यालय में स्वच्छता हेतु अभिप्रेरित किया जाता है?		

36-स्वच्छ भारत अभियान खुले में शौच को समाप्त करने में कारगर सिद्ध हुआ है। 37. केंद्र सरकार देश के लगभग 15 फीसदी जिलों में सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान चला रही है। 38 भारत में कचरे की समस्या तो बहुत गंभीर है और शहरों में रोजाना करीब 2 लाख टन कचरा तैयार होता है। 19. क्या स्वच्छ भारत अभियान केवल केंद्र सरकार की जागरूकता से ही सफल होगा? 40- क्या विद्यालय में शौच के बाद हाथ धुलने हेतु साबुन की व्यवस्था है? 41- क्या विद्यालय में कचरे के निपटान की उचित व्यवस्था है? 42- क्या विद्यालय में बच्चों के नाखून आदि की सफाई की जांच होती है? 43- स्वच्छ भारत अभियान से क्या सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न होगी? 44- स्वच्छ भारत अभियान को आई.सी.टी. द्वारा और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है| 45- स्वच्छता सर्वे 2018 में इन्दौर सिटी को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ है। 46- क्या विद्यालय में स्वच्छता सप्ताह का आयोजन किया जाता है? 47- दिव्यांग छात्रों हेतु विद्यालय में शौचालय का उचित प्रबंध है | 48- इस अभियान के प्रति युवा पीढ़ी एक विकसित देश बनाने में सहायक होगी|		

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में शहरी छात्रों के

प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	छात्र का नाम	प्राप्तांक
1.	राकेश सिंह	24
2.	अंकुश	28
3.	दिलीप कुमार	32
4.	मो. इदरीस	26
5.	लवलेश कुमार	27
6.	प्रशांत	29
7.	शारदा प्रसाद	34
9.	अंकित त्रिपाठी	38
10	अरविन्द Arc	35
11.	देवमुनि प्रजापति	42
12.	सत्यनारायण	39
13.	अब्दुल गफ्फार	25
14.	धनंजय परिहार	22
15.	अनुपम मौर्य	27
16.	देवीदीन कुशवाहा	28
17.	रविकांत	32
18.	प्रदीप कुमार	36
19.	शिवपूजन पटेल	38
20.	अनुज	41
21.	संदीप	44
22.	गौरव शिवहरे	30
23.	शिवम अग्रवाल	27
24.	अतुल श्रीवास्तव	31

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में शहरी छात्रों के प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	छात्र का नाम	प्राप्तांक
1.	भूपेन्द्र सिंह	44
2.	शहीद हसन	30
3.	नरेन्द्र	27
4.	कुलदीप कुमार	31
5.	बालकृष्ण चतुर्वेदी	36
6.	अतुल गुप्ता	40
7.	सुधांशु सोनी	34
8.	राजेश कबीर	38
9.	देवेन्द्र	35
10.	नीरज	44
11.	मनीष कुमार पटेल	30
12.	अनिल	31
13.	दीपक अवस्थी	36
14.	विनोद मिश्र	40
15.	मनोज	42
16.	प्रमोद कुमार सिंह	39

17.	अरुण कुमार	25
18.	विनय शुक्ला	22
19.	रमाकांत	27
20.	शैलेन्द्र सिंह	28
21.	आशीष सिंह	32
22.	शिशुपाल सिंह	36
23.	सद्दाम अली	38
24.	राहुल सिंह	41
25.	मोहन	27

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में शहरी छात्राओं के प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	छात्रा का नाम	प्राप्तांक
1.	रागिनी गुप्ता	32
2.	पूजा राय	26
3.	मीना सिंह	27
4.	किरन याज्ञिक	29
5.	बबिता सिंह	24
6.	नंदिता सोनी	28

7.	स्नेहा वर्मा	34	
9.	कनकलता साहू	38	
10	जयश्री पाठक	39	
11.	नीलिमा उपाध्याय	25	
12.	काव्या गर्ग	22	
13.	नीलम	27	
14.	तपस्या खरे	28	
15.	नाजमीन बानो	32	
16.	स्वाती अग्रवाल	35	
17.	शिवानी सोनी	42	
18.	शिल्पी पटेल	36	
19.	रोशनी सिंह	38	
20.	काव्या सिंह	41	
21.	माधुरी सेन	44	
22.	निवेदिता अग्रवाल	30	
23.	शिवेंद्र जाटव	27	
24.	भानुमती	30	
25.	वैष्णवी श्रीवास	27	
26.	बंदिता शिवहरे	37	

स्वच्छ भारत अभियान के प्रति जागरूकता के सन्दर्भ में ग्रामीण छात्राओं के प्राप्तांकों का विवरण

क्रमांक	छात्रों की संख्या	प्राप्तांक
1.	सुनैना देवी	32
2.	पार्वती देवी	36
3.	जुबैदा बेगम	38
4.	रुकसाना बानो	41
5.	लवली त्रिपाठी	40
6.	शिवानी जायसवाल	34
7.	ज्योति	38
9.	सुचेता केशरवानी	35
10	वंदना गुप्ता	44
11.	पूनम पाण्डेय	30
12.	रजनी देवी	44
13.	कौशल कुमारी	30
14.	शैलेश कुमारी	27
15.	आरती	31
16.	संध्या	36
17.	दीपू पाण्डेय	27

17.	उमा देवी	31
18.	वैशाली देवी	36
19.	प्रीती	40
20.	किरन	42
21.	रिंकी कुशवाहा	39
22.	सरोज कुमारी	25
23.	सविता देवी	22
24.	विटोला	27
25.	फूलमती	28

SWACHH BHARAT

लगा सको तो बाग़ लगाओ, आग लगाना मत सिखों।
फैला सको तो प्यार फैलाओं, कचरा फैलाना मत सीखो।

आवश्यक है
स्वच्छता,
जिससे कायम
रहे आरोग्यता

करे प्रतिज्ञा रखेंगे स्वच्छता का ध्यान, तभी बनेगा अपना भारत महान।